Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1/18

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

❀ काशी विश्वनाथो विजयते तराम् ❀

कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत

❀ कैवल्योपनिषद् ❀

एवं

शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत

❀ मुक्तिकोपनिषद् ❀

हिन्दी सरलार्थ सहित

सम्पादक—

वाराणसेय संन्यासि-संस्कृत-महाविद्यालय के

भूतपूर्व प्रधानाचार्य साहित्य वेदान्ताचार्य

पण्डितप्रवर श्री महादेवोपाध्याय

संयोजक—

मन्त्री स्वामीधर्मानन्द

श्री संन्यासि संस्कृत कालेज वाराणसी

प्रकाशक—

अहमदाबाद सरसपुर निवासी

श्री जीवनलाल आशाराम पिता जी की पुण्यस्मृति में चि०

विनोद भाई ने मुमुक्षु जनों के

हितार्थ-प्रकाशित किया।

प्रति १००० —सन् १९६१— मूल्य सदुपयोग

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुष्टि प्रकाशनम्

श्रीयुत् जीवनलाल आशाराम जी अहमदाबाद सरसपुर निवासी थे। गुरु तथा देव भक्ति, साधुसेवा, विद्वत्सत्कार तथा सद्धर्मपरायणता आप का परम कर्तव्य था। वेदान्त विषयमें आपकी परम निष्ठा थी। आप के दिवंगत होने पर पिता के समानशील आप के चिरञ्जीवी पुत्र श्री विनोद भाई जीवनलाल जी ने पिता के पुण्य-स्मृत्यर्थं उनकी भावना के अनुसार जन सामान्य के हितार्थं कैवल्योपनिषत् तथा मुक्तिकोपनिषत् का हिन्दी भाषा में अनुवाद कराने की मुझसे प्रेरणा की। इस पवित्र कार्य के संयोजन भार को सहर्ष लेकर मैंने वाराणसेय संन्यासि संस्कृत महाविद्यालय के भूतपूर्व प्रधानाचार्य साहित्य वेदान्ताचार्य पण्डितप्रवर श्री महादेवोपाध्याय जी से इस पुण्यकृत्य के सम्पादनार्थ निवेदन किया। आपने सहर्ष स्वीकार कर सानुराग इस ग्रन्थ का सम्पादन किय प्रकाशक तथा सम्पादक महोदय के इस परमपूत विचार से मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। मैं हृदय से इन महानुभावों के चिरायुष्य की कामना करता हूँ।

स्वामी धर्मानन्द

मन्त्री—श्री संन्यासि संस्कृत कालेज

वाराणसी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1/18
LIBRARY
No. 1/18
Shri Shri ... Ashram
BANARAS

समर्पण

विश्व की उत्पत्ति, स्थिति, लयकारिक सर्वव्यापक नित्य शुद्धबुद्ध, मुक्तस्वभाव, सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म, जो भक्तों के हृदय में आनन्दस्वरूप से प्रकट होते हैं। समस्त संसार में जो सुख की वर्षा करते हैं जो समस्त ज्ञान के भंडार हैं, जो भक्तों को लौकिक एवं पारलौकिक आनन्द देते हैं ऐसे

मङ्गलमय श्रीकाशी विश्वनाथजी

के

चरणकमलों में यह

कैवल्य-मुक्तिकोपनिषद्

समर्पित करके आत्मसन्तोष का अनुभव करता हूँ।

अविनाशी अज अद्वैत मङ्गलधाम शिव शशि भूषणम्।
सर्वज्ञ सुखद अनादि शुभ गुणधाम दारिद दूषणम्॥
सुरवृन्द मुनि-मन मोद-प्रद "विनोद" मङ्गलकारणम्।
यह शुभ "उपनिषद्" विश्वनाथ मोद हेतु समर्पणम्॥

—विनोद भाई

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

॥ श्री काशी विश्वनाथो विजयतेतराम् ॥

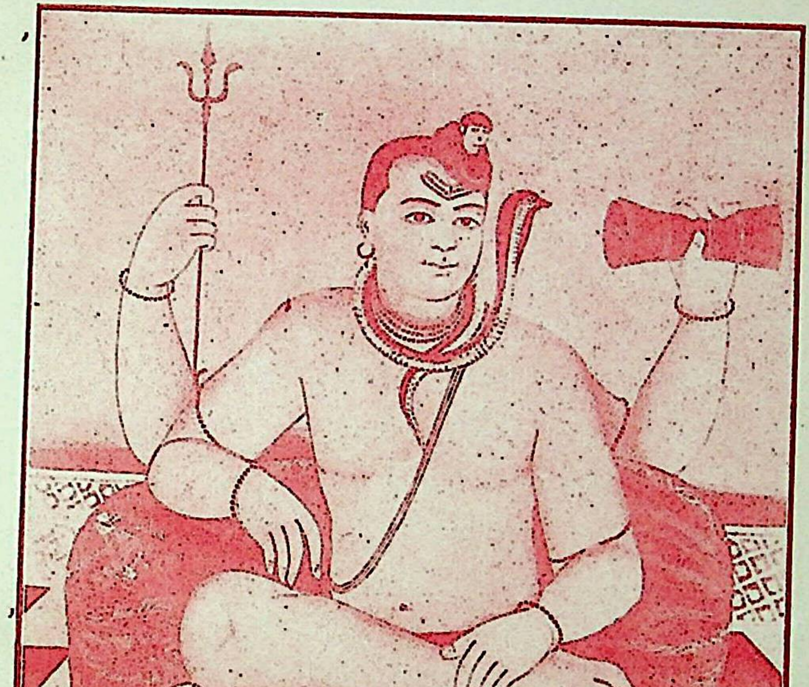

सानन्द मानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम् ।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणंप्रपद्ये ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
No.........1/18
Shri Shri Ma Anandamayee Ashram
BANARAS

अथेदं किञ्चित् कैवल्योपनिषद् विषये प्रस्तूयते

तत्रोपनिषदितिपदस्य समूलाज्ञानशातनी विद्याऽर्थो व्युत्पादितः श्रीमद्भिः शङ्करभगवत्पादैर्बृहदारण्यकोपनिषद उपोद्घातभाष्ये। कैवल्य पदस्य चात्मनो देहादिसम्बन्धराहित्यं विदेहमुक्तिरूपं विवक्षितम्। तथा च कैवल्यस्यात्मसाक्षात्कारद्वारा सम्पादिका ब्रह्मविद्या कैवल्योपनिषद् पदस्य शक्यार्थः। तज्जनके चात्र ग्रन्थे लाक्षणिकप्रयोगः।

अस्यां चाश्वलायनाय भगवन्तं परमेष्ठिनं विधिवदुपसन्नाय सद्भिः सेव्यमानां निगूढां ब्रह्मविद्यां पृष्टवते पितामहस्तां प्रोवाच इत्याख्यायिका मुखेन सम्यक् ब्रह्मोपदिष्टम्। ब्रह्मज्ञानस्य च भक्तिध्यानयोगाख्यानि त्रीणि साधनान्युपदिष्टानि। यागहोमादिकर्मणां पुत्रपौत्रादिसम्पदो धनस्य च तदकारणत्वमुक्तम्। त्यागस्य चामृतत्वप्राप्तावाराद्उपकारकत्वमुक्तम्। कर्मिणः नाकं विशन्ति ब्रह्मप्राप्तौ यतमाना योगिनस्तु नाकं परेण निहितं बुद्धिगुहायां यद्विभ्राजते तद्विशन्तीत्युक्तम्। तत्र च ब्रह्मप्राप्तावधिकारिणो वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितात्मपरैक्याः संन्यासयोगाच्छुद्धसत्त्वा यतय एव नं त्वन्ये इति च प्रदर्शितम्। ते च जीवनकाले ब्रह्मसाक्षात्काराभावे सगुण ब्रह्मोपासनया ब्रह्मलोकं गतास्तत्रापरब्रह्मरूपगुरुसन्निधानेन ब्रह्मविदां च सन्निधानेन ब्रह्मसाक्षात्कारवन्तो हिरण्यगर्भस्यान्तकाले विदेहकैवल्यमाप्नुवन्तीति सगुणब्रह्मोपासकानां क्रमिकमुक्तिः प्रदर्शिता। मर्त्यलोके जीवतः पारिव्राज्यम-रण्यनदीतीरादिरूपो निरुपद्रवदेशः, आसनं सकलेन्द्रियनिरोधो, गुरुभक्तिः,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सततं हृदयपुण्डरीके भगवत उमासहायस्य परमेश्वरस्य ध्यानं च ब्रह्मप्राप्त्यै साधनत्वेन प्रदर्शितम्। उपास्यरूपस्य च परमशिवस्य सर्वात्मकत्वं प्रदर्श्य तद्दर्शनस्य सर्वभूतेष्वात्मदर्शनस्यात्मनि सर्वभूतदर्शनस्यच विमुक्तिसाधनत्वमभिहितम्। स्वदेहे समुत्पद्यमाने नादे प्रणवस्य रूपध्यानाभ्यासस्य चाशेषपापप्लोषकत्वमुक्तम्। परमेश्वर एव मायापरिमोहितात्मा शरीरमधिष्ठाय सर्वं जगत्करोति। दृष्टिसृष्टिवादे द्रष्टुरेव स्रष्टृत्वात्। स एव च जीवभावमापन्नः परमेश्वरः जाग्रद्दशायां भोक्ता, स्वप्नेऽपि जीव एव कर्ता भोक्ता च। सुषुप्तिकाले तु दृष्टिविलये सृष्टिविलयात् पुनः सुखरूपस्वस्वरूपं स एति। पुनश्च स एव सुप्तो जीवो जन्मान्तरकर्मयोगात् प्रबुद्धो भवति, इत्येवं स्थूल सूक्ष्म कारण शरीररूपपुरत्रये क्रीडतो जीवस्यै साक्षात् कर्मद्वारा वा सकलसर्गकर्तृत्वमित्युक्तम्। सृष्टिदृष्टिवादमाश्रित्य तु पुरत्रयलयाधिष्ठानस्याखण्डानन्दबोधरूपस्य स्वसृष्टरजःप्रधानभूतसूक्ष्मपञ्चकोपहितस्य प्राणोपादानत्वं, सत्वप्रधानभूतसूक्ष्मपञ्चकोपहितस्य च मन उपादानत्वं, रजःप्रधानतत्तद्भूतसूक्ष्मोपहितस्य च तत्तत्कर्मेन्द्रियोपादानत्वं, सत्त्व प्रधानतत्तद्भूतसूक्ष्मोपहितस्य च तत्तज्ज्ञानेन्द्रियोपादानत्वं, तमःप्रधान तत्तद्भूतसूक्ष्मोपहितस्य च खादिमहाभूतोपादानत्वम्। एवं प्रपञ्चजगं ब्रह्मण्यध्यारोप्य तन्निषेधेन सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरमचिन्त्यमवाङ्मनसगोचरं ब्रह्म तदेव त्वमसीति जीवब्रह्मणोरैक्यमुपदिष्टम्। ब्रह्मणश्च जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिप्रपञ्चसाक्षित्वमवस्थात्रये भोक्तृभोग्यभोगसाक्षित्वं तद्विलक्षणत्वं चिन्मात्रत्वं चोक्त्वा स्वस्मिंश्च सकलप्रपञ्चजनिस्थितिलयाधिष्ठानत्वमुक्त्वा प्रथम खण्डान्ते ब्रह्मैक्यमुपसंहृतम्। द्वितीयखण्डोपक्रमे चाविशेषेण सविशेष निर्विशेषोभयब्रह्मरूपत्वं स्वस्मिन्वेद्यमित्युपदिश्य तद्वेदनस्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शुद्धपरमात्मप्राप्तिरूपं फलमुक्तम्। द्वितीय खण्डान्ते च शतरुद्रियाध्ययनस्याग्निवायुध्यातात्मभिः तुल्यं पावकत्वमुक्तम्। किञ्च तदध्ययनस्य पञ्च महापातक प्रायश्चित्तरूपत्वं कृत्याकृत्यपावनत्वं फलमुक्त्वा तेन फलेन प्रलोभ्य तज्जपेनाश्रमिणां प्रवृत्तिः कारिता। सर्वान्ते च कैवल्योपनिषदध्ययनस्य संसारार्णवनाशहेतुज्ञानोपायत्वं प्रदर्शितम्। एतत्प्रतिपादित जीव ब्रह्मैक्य साक्षात्कारस्य च कैवल्यपदप्राप्तिः फलमित्येवमत्र वहवो ज्ञान प्राप्तिमार्गा भक्तियोगध्यानत्याग परिव्रज्या गुरुभक्ति शतरुद्रियाध्ययनादयोऽधिकारिभेदेन प्रदर्शिता इति सर्वथैयमन्वर्था कैवल्योपनिषद् मुमुक्षूणां महदुपकरोतीतितस्याः सुखावबोधाय श्री स्वामि धर्मानन्द महाराज सत्प्रेरणया श्रीमहादेवोपाध्यायेन हिन्दीभाषायामनुवादः कृतः। इत्युभावपि नूनं पुण्यश्लोकाविति सम्मन्ये।

रघुनाथ शर्मा
वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालये
वेदान्त विभागाध्यक्षः

LIBRARY
No........
Shri Shri Ma Anandamayee Ashram
BANARAS.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रस्ताविकम्

कैवल्योपनिषद् के सम्बन्ध में कुछ शब्द प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

वासना के सहित अज्ञान को विलय करने वाली जो विद्या उसे उपनिषद् कहते हैं। आत्म साक्षात्कार द्वारा कैवल्य की सम्पादिका ब्रह्मविद्या कैवल्योपनिषद् पद का वाच्यार्थ है। उस ब्रह्म विद्या के जनक इस ग्रन्थ को कैवल्योपनिषद् कहते हैं।

भगवान् ब्रह्मा के पास विधिपूर्वक गए हुये आश्वलायन से ब्रह्मा जी ने रहस्यभूत ब्रह्म विद्या का उपदेश किया है। ब्रह्म ज्ञान का भक्ति, ध्यान तथा योग ये तीन साधन बतलाये गए हैं। यज्ञ होमादि कर्म, पुत्र पौत्रादि तथा धन सम्पत्ति उसके कारण नहीं हैं। त्याग अमृतत्व प्राप्ति का परम्परया उपकारक है। कर्म करने वाले स्वर्ग जाते हैं तथा योगी स्वर्ग से पृथक् बुद्धि में स्थित जो ज्योति उसमें प्रवेश करते हैं। ब्रह्म प्राप्ति के अधिकारी वे ही यति हैं जो वेदान्त के श्रवण मनन से आत्मा परमात्मा की एकता का निश्चय कर लिये हैं। तथा संन्यास योग से जिनका अन्तःकरण शुद्ध हो चुका है।

योगी ब्रह्म साक्षात्कार के पूर्व सगुणब्रह्म की उपासना द्वारा ब्रह्मलोक प्राप्त करते हैं। वहाँ पर हिरण्यगर्भ गुरु के तथा ब्रह्मज्ञानियों के समीप रहकर ब्रह्मसाक्षात्कार करते हैं। इस प्रकार सगुण ब्रह्म के उपासकों की क्रमिक मुक्ति बतलायी गई है। मर्त्यलोक में साधकों के लिए संन्यास निर्विघ्न प्रदेश, आसन, सकलेन्द्रिय निरोध, गुरुभक्ति तथा हृत्पुण्डरीक में उमासहित भगवान् परमेश्वर का ध्यान ब्रह्मप्राप्ति के साधन कहे गये हैं। उपास्य शिव की सर्वात्मकता बतलाकर सभी भूतों में आत्मदर्शन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा आत्मा में सर्वभूत दर्शन मुक्ति का साधन कहा गया है। शरीर में नाद उत्पन्न होने पर प्रणव के ध्यानाभ्यास से सभी पापों का दाह होता है। परमेश्वर ही माया रूप उपाधि द्वारा शरीरी बन कर जगत् की सृष्टि करता है। क्योंकि दृष्टि सृष्टिवाद में द्रष्टा ही स्रष्टा है। जीवभावापन्न परमेश्वर ही जाग्रत् दशा में तथा स्वप्नावस्था में भोक्ता तथा कर्ता बनता है। सुषुप्तिकाल में दृष्टि के विलय होने पर सृष्टि के अभाव में वही जीव सुख रूप अपने स्वरूप को प्राप्त करता है। फिर वही सुप्त जीव जन्मान्तर के कर्मों के सम्बन्ध से प्रबुद्ध होकर स्थूल सूक्ष्म तथा कारण शरीर रूप पुरत्रय में क्रीड़ा करता हुआ साक्षात् अथवा कर्म द्वारा अपने को सभी क्रियाओं का कर्ता मानता है। सृष्टिदृष्टिवाद के अनुसार पुरत्रय के लय का अधिष्ठान अखण्डानन्दबोध, स्वरचित रजः प्रधान पाँच भूत सूक्ष्मों से उपहित होकर प्राण का उपादान, सत्व प्रधान पाँच भूत सूक्ष्मों से उपहित होकर मन का उपादान, राजः प्रधान तत्तद्भूतसूक्ष्मों से उपहित होकर उन उन कर्मेन्द्रियों का उपादान, सत्वप्रधान तत्तद्भूत सूक्ष्मों से उपहित होकर उन उस ज्ञानेन्द्रियों का उपादान तथा तमःप्रधान तत्तद्भूत सूक्ष्मों से उपहित होकर आकाशादि पञ्च महाभूतों का उपादान होता है। इस प्रकार समस्त प्रपञ्च ब्रह्म में अध्यारोप कर तन्निषेधद्वारा सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, वाणी मन का अविषय जो नित्य ब्रह्म उसी का जीव के साथ एकत्व का प्रतिपादन किया गया है। ब्रह्म ही जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति आदि प्रपञ्चों का साक्षी है तथा तीनों अवस्थाओं के भोक्ता, भोग्य तथा भोग का प्रकाशक है, सभी से विलक्षण तथा ज्ञान स्वरूप है वही सकल प्रपञ्च की उत्पत्ति स्थिति तथा लय का अधिष्ठान है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस प्रकार ब्रह्मैक्य का प्रतिपादन कर प्रथम खण्ड का उपसंहार किया गया है। द्वितीय खण्ड के उपक्रम में सविशेष तथा निर्विशेष दोनों प्रकार की ब्रह्मरूपता अपने स्वरूप में जाननी चाहिए। इस प्रकार उपदेश देकर ऐसी अनुभूति का फल शुद्धपरमात्मा की प्राप्ति बतलाई गई है। द्वितीय खण्ड के अन्त में शतरुद्रियाध्ययन का अग्नि, वायु, तथा आत्मध्याता के समान ही पावकत्व कहा गया है। इसका अध्ययन महापातक का प्रायश्चित्त स्वरूप है तथा इस अध्ययन का फल कृत्य तथा अकृत्य का पावनत्व है। इस फल के प्रलोभन द्वारा इसके जप से आश्रमियों की इसमें प्रवृत्ति कराई गई है।

अन्त में कैवल्योपनिषद् का अध्ययन संसारसागर के नाश का कारण जो ज्ञान, उसका उपाय है। इस उपनिषद् से बोधित जो जीव ब्रह्म की एकता, उसके साक्षात्कार का फल कैवल्य पद प्राप्ति है। इस प्रकार इस उपनिषद् में भक्तियोग ध्यान, त्याग, परिव्रज्या, गुरुभक्ति तथा शतरुद्रियाध्ययन आदि बहुत से ज्ञानप्राप्ति के मार्ग अधिकारी भेद से दिखाए गए हैं। इसलिए अन्वर्थ यह कैवल्योपनिषद् मुमुक्षुजनों की अत्यन्त उपकारिका है। इसके सुखावबोध के लिए काशिक संन्यासिसंस्कृतमहाविद्यालय के मंत्री श्री स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की आज्ञा तथा वाराणसेय हरिश्चन्द्रइण्टरकालेज के संस्कृत प्राध्यापक साहित्याचार्य श्री त्रिवेणी प्रसाद पाण्डेय के सहयोग से मैंने हिन्दी भाषा में अनुवाद किया।

महात्मनां विदुषामाश्रवः
महादेवोपाध्यायः
प्राध्यापकः, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालये, वाराणसी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पनि

कैवल्योपनिषत्

कैवल्योपनिषद्वेद्यं कैवल्यानन्दतुन्दिलम् ।
कैवल्यगिरजारामं स्वमात्रं कलयेऽन्वहम् ॥

हरिः ॐ ॥ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ अथाश्वलायनो भगवन्तं परमेष्ठिनमुपसमेत्योवाच ।

अधीहि भगवन्ब्रह्मविद्यां वरिष्ठां सदा सद्भिः सेव्यमानां निगूढाम् । यथा चिरात्सर्वपापं व्यपोह्य परात्परं पुरुषं याति विद्वान् ॥ १ ॥

कैवल्य रूप आनन्दस्वरूप कैवल्योपनिषद् से जाननेयोग्य, मोक्षस्वरूप, स्वप्रकाश आत्मा का प्रतिदिन आत्मकल्याणार्थ मैं चिन्तन करता हूँ ।

ओङ्कारश्चाथ शब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा ।
कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ ॥

इस उक्ति के अनुसार यहाँ पर मङ्गल दार्ढ्यं (दृढता) के लिये "ॐकार" तथा "अथ" इन दोनों शब्दों का प्रयोग किया गया है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अश्वलायन ऋषि ने भगवान् ब्रह्मा के पास जाकर कहा— कि हे भगवन् ! सर्वश्रेष्ठ सर्वदा सज्जनों से सेवित रहस्यभूत ब्रह्म विद्या का उपदेश कीजिए। जिससे चिरकाल से संचित सभी पापों को दूर कर ज्ञानी परात्पर पुरुष को प्राप्त करता है ॥ १ ॥

तस्मै स होवाच पितामहश्च श्रद्धा भक्तिध्यानयोगोदवैहि। न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागे नैके अमृतत्वमानशुः ॥ २ ॥

ब्रह्मा ने अश्वलायन से कहा कि उस पुरुष को श्रद्धा भक्ति ध्यान तथा योग द्वारा जानना चाहिए। वह कर्म, सन्तान तथा धन के द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता। ज्ञानियों ने सभी कर्मों के सन्यास द्वारा ही अमृतत्व प्राप्त किया हैं ॥ २ ॥

परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजते यद्यतयो विशन्ति। वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः ॥ ३ ॥

वह स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है, तथा बुद्धि में स्थिर होकर प्रकाशमान है। वेदान्त के श्रवण-मनन से जिन्होंने वस्तु की यथार्थता का निश्चय कर लिया है तथा जिनका अन्तःकरण शुद्ध है ऐसे यति संन्यास योग द्वारा उसे प्राप्त करते हैं ॥ ३ ॥

ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे। विविक्तदेशे च सुखासनस्थः शुचिः समग्रीवशिरःशरीरः ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वे विद्वान् ब्रह्मलोक वासी होकर हिरण्यगर्भ के साथ निवास करते हैं तथा अन्त में प्रलयकाल आने पर उन्हीं हिरण्यगर्भ के साथ अमृतत्त्व प्राप्ति द्वारा मुक्त हो जाते हैं। एकान्त स्थान में सुखप्रद पद्मासनादि आसनों का सहारा लेकर, पवित्र होकर, ग्रीवा, शिर तथा शरीर को सीधा करके ॥ ४ ॥

अन्त्याश्रमस्थः सकलेन्द्रियाणि निरुध्य भक्त्या स्वगुरुं प्रणम्य । हृत्पुण्डरीकं विरजं विशुद्धं विचिन्त्य मध्ये विशदं विशोकम् ॥ ५ ॥

संन्यास आश्रम में रहते हुए सभी ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों के व्यापारों को रोककर श्रद्धाभक्ति पूर्वक गुरुदेव को प्रणाम कर मुनि उस आत्मा को प्राप्त करता है। जो आत्मा रजोगुणरहित तथा सभी दोषों से निर्मुक्त, हृदय रूप कमल में ध्येय है। जो आत्मा विशुद्ध तथा शोकरहित है ॥ ५ ॥

अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तरूपं शिवं प्रशान्तममृतं ब्रह्मयोनिम् । तमादिमध्यान्तविहीनमेकं विभुं चिदानन्दमरूपमद्भुतम् ॥ ६ ॥

जो अचिन्त्य, अव्यक्त, अनन्त, शिव, प्रशान्त, अमृत, वेदों का कारण अथवा हिरण्यगर्भ का कारण, आदि, मध्य, अन्त से शून्य अर्थात् अनादि, अनन्त, एक, सर्वत्र व्यापक, ज्ञान स्वरूप, आनन्द स्वरूप, रूपरहित तथा लोक विलक्षण है ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उमासहायं परमेश्वरं प्रभुं त्रिलोचनं नीलकण्ठं प्रशान्तम्। ध्यात्वा मुनिर्गच्छति भूतयोनिं समस्तसाक्षिं तमसः परस्तात् ॥ ७ ॥

मुनियों का ध्येय जो परमेश्वर उमा सहित सर्वथासमर्थ, तीननेत्रोंवाला, नीलकण्ठ, प्रशान्त, समस्त भूतों का कारण, समस्त प्रपञ्च का प्रकाशक तथा अज्ञान से पृथक् है ॥ ७ ॥

स ब्रह्मा स शिवः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट्। स एव विष्णुः स प्राणः स कालोऽग्निः स चन्द्रमाः ॥ ८ ॥

वही परब्रह्म माया रूप उपाधि से युक्त होकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, तथा इन्द्र, बनता है तथा अनश्वर है। परात्पर तथा स्वप्रकाश है। वही प्राण, काल, अग्नि तथा चन्द्रमा बनता है ॥ ८ ॥

स एव सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यं सनातनम्। ज्ञात्वा तं मृत्युमत्येति नान्यः पन्था विमुक्तये ॥ ९ ॥

इस जगत में बीते हुए तथा भविष्य में आने वाले अथवा जो सनातन पदार्थ हैं सब कुछ वही परब्रह्म है। उसी के ज्ञान द्वारा मुमुक्षु मृत्यु को पार करता है। उसके अतिरिक्त क्लेश निवृत्ति (विमुक्ति) का अन्य कोई भी उपाय नहीं ॥९॥

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि। संपश्यन्ब्रह्म परमं याति नान्येन हेतुना ॥ १० ॥

उस आत्मरूप ब्रह्म का दर्शन, सभी भूतों में आत्म दर्शन तथा आत्मा में सभी भूतों का दर्शन करने वाला ज्ञानी उस परात्पर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रह्म को प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त ब्रह्म प्राप्ति का कोई भी साधन नहीं है ॥ १० ॥

आत्मानमरणिं कृत्वा प्रणवं चोत्तरारणिम् । ज्ञाननिर्मथनाभ्यासात्पापं दहति पण्डितः ॥ ११ ॥

कर्म वासना रूप पाप के रहते हुए मोक्ष सम्भव नहीं, अतः ज्ञानी शरीर को नीचे की अरणि तथा ओंकारको ऊपर की अरणि बनाकर निदिध्यासन का पुनः पुनः दृढ़ अभ्यास कर सभी पापों को दग्ध कर देता है ॥ ११ ॥

स एव मायापरिमोहितात्मा शरीरमास्थाय करोति सर्वम् । स्त्रियन्नपानादिविचित्रभोगैः स एव जाग्रत्परितृप्तिमेति ॥ १२ ॥

वही चैतन्य मायोपहित होकर शरीर धारण करता है तथा सभी क्रियाओं का कर्ता बन जाता हैं। जाग्रत् अवस्था में वही जीव रूप में स्त्रीअन्नपान आदि विचित्र भोगों के द्वारा अपने को तृप्त समझता है ॥ १२ ॥

स्वप्ने स जीवः सुखदुःखभोक्ता स्वमायया कल्पितजीवलोके । सुषुप्तिकाले सकले विलीने तमोऽभिभूतः सुखरूपमेति ॥ १३ ॥

वही जीव स्वप्नावस्था में कल्पित जीव लोक में सुख तथा दुःख का भोक्ता बनता है। सुषुप्ति काल में जब सभी प्रपञ्चों का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लय हो जाता है तथा केवल कारण शरीर रह जाता है तब प्रपञ्च रहित सुख स्वरूप में स्थित होता है ॥ १३ ॥

पुनश्च जन्मान्तरकर्मयोगात्स एव जीवः स्वपिति प्रबुद्धः। पुरत्रये क्रीडति यश्च जीवस्ततः सुजातं सकलं विचित्रम् ॥ १४ ॥

सुषुप्ति अवस्थापन्न वही जीव जन्मातर के कर्मों के सम्बन्ध से जाग्रत् अवस्थापन्न हो जाता है। उस अवस्था में स्थूल सूक्ष्म तथा कारण शरीर से सम्बन्ध रख कर सभी व्यवहारों में प्रवृत्त होता है और नाना प्रकार के भोगों में संलग्न हो जाता है। वह आत्मा जिसमें तीनों शरीरों का लय होता है सर्वाधार आनन्द स्वरूप तथा अखण्ड बोध रूप है ॥ १४ ॥

अधारमानन्दमखण्डबोधं यस्मिँल्लयं याति पुरत्रयं च। एतस्माज्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रियाणि च। खं वायुर्ज्योतिरापश्च पृथ्वी विश्वस्य धारिणी ॥ १५ ॥

वही चैतन्य प्राण, मन, ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, आकाश, वायु, अग्नि, जल, तथा सभी वस्तुओं को धारण करने वाली पृथिवी का, उपहित होकर कारण बनता है ॥ १५ ॥

यत्परं ब्रह्म सर्वात्मा विश्वस्यायतनं महत्। सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं नित्यं स त्वमेव त्वमेव तत् ॥ १६ ॥

जो परात्पर सर्वात्मस्वरूप स्थावर जङ्गमात्मक जगत् का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अधिष्ठान महत्, सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म, नित्य ब्रह्म है वही तत्व-मस्यादि श्रुतियों से वेद्य जीवस्वरूप है ॥ १६ ॥

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिप्रपञ्चं यत्प्रकाशते । तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा सर्वबन्धैः प्रमुच्यते ॥ १७ ॥

जब कि जीव, जाग्रत् स्वप्न सुषुप्त्यादि प्रपञ्चों का प्रकाशक जो ब्रह्म "मैं वही हूँ" यह जान जाता है उसी समय सभी कर्म बन्धनों से छूट जाता है ॥ १७ ॥

त्रिषु धामसु यद्भोग्यं भोक्ता भोगश्च यद्भवेत् । तेभ्यो विलक्षणः साक्षी चिन्मात्रोऽहं सदाशिवः ॥ १८ ॥

जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, इन तीन अवस्थाओं में जो भोग्य, भोक्ता, तथा भोग है उससे भिन्न प्रकाशक, ज्ञान स्वरूप, सनातन तथा शिवरूप मैं हूं ॥ १८ ॥

मय्येव सकलं जातं मयि सर्वं प्रतिष्ठितम् । मयि सर्वं लयं याति तद्ब्रह्माद्वयमस्म्यहम् ॥ १९ ॥

इति प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

सभी प्रपञ्चों का निमित्त कारण तथा सभी का अधिष्ठान् मैं हूँ मुझमें ही सभी प्रपञ्चों का विलय होता है, मैं ही अद्वितीय ब्रह्म हूँ ॥ १९ ॥

इति कैवल्योपनिषदः प्रथमः खण्डः ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

। अथ द्वितीय खण्डः ।

अणोरणीयानहमेव तद्वन्महानहं विश्वमहं विचित्रम् ।
पुरातनोऽहं पुरुषोऽहमीशो हिरण्मयोऽहं शिवरूपमस्मि ।२०।

सूक्ष्म से भी सूक्ष्म मैं ही हूँ इसी प्रकार महान् आकाशादि मैं ही हूँ और स्थावर जङ्गमात्मक विश्व मैं ही हूँ । सबसे प्राचीन, घट-घटवासी, सर्वेश्वर, प्रकाश रूप तथा शिव रूप मैं ही हूँ ॥२०॥

अपाणिपादोऽहमचिन्त्यशक्तिः पश्याम्यचक्षुः स शृणोम्यकर्णः अहं विजानामि विविक्तरूपो न चास्ति वेत्ता मम चित्सदाऽहम् ॥ २१ ।

हस्त पादादि इन्द्रियों से रहित मैं हूँ । मेरी शक्ति की सीमा नहीं । बिना नेत्र के भी मैं सर्वदर्शी हूँ, कर्ण के बिना भी मैं सब कुछ सुनता हूँ । मैं सबसे पृथक होकर सभी प्रपञ्चों का साक्षी हूँ, आत्माकार वृत्ति के बिना मुझे कोई जान नहीं सकता स्वरूप भूत ज्ञान मैं ही हूँ ॥ २१ ॥

वेदैरनेकैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् । न पुण्यपापे मम नास्ति नाशो न जन्मदेहेन्द्रियबुद्धिरस्ति ।२२।

सभी वेदों का वेद्य मैं हूँ, उपनिषदों का कर्ता तथा वेदों को जानने वाला मैं हूं, वे मुझमें पुण्य का संसर्ग नहीं, उत्पत्ति, विलय तथा शरीर इन्द्रिय और बुद्धि का मुझमें सम्बन्ध नहीं ॥२२॥

न भूमिरापो न च वह्निरस्ति न चानिलो मेऽस्ति न

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चाम्बरं च । एवं विदित्वा परमात्मरूपं गुहाशयं निष्कलु-मद्वितोयम् ॥ २३ ॥

पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश का मुझमें कोई सम्बन्ध नहीं । इस प्रकार परमात्मस्वरूप, बुद्धि रूप गुहा में स्थित, प्रपञ्च रहित, अद्वितीय ॥ २३ ॥

समस्तसाक्षिं सदसद्विहीनं प्रयाति शुद्ध परमात्मरूपम् ॥

यः शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो भवति स आत्मपूतो भवति स सुरापानात्पूतो भवति स ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति स सुवर्णस्तेयात्पूतो भवति स कृत्याकृत्यात्पूतो भवति तस्मादविमुक्तमाश्रितो भवत्वित्या-श्रमो सर्वदा सकृद्वा जपेत् ॥

अनेन ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनम् । तस्मादेवं विदित्वैनं कैवल्यं पदमश्नुते ॥ कैवल्यं पदमश्नुते इति ॥२४॥

इति द्वितीयः खण्डः ॥ २ ॥

ॐ सह नाववत्विति शान्तिः ॥

इत्यथर्ववेदीयकैवल्योपनिषत्समाप्ता ।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

समस्त प्रपञ्चों का प्रकाशक सत् और असत् पदार्थों से विलक्षण मुझे जानकर जीव शुद्ध परमात्म रूप हो जाता है । जो शतरुद्रिय का अध्ययन करता है वह अग्नि के समान, वायु के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समान, आत्मा के समान, पावक बन जाता है। वह सुरापान जनित दोष, ब्रह्म हत्या जनित दोष, सुवर्णस्तेय जनित दोष, तथा कर्त्तव्याकर्तव्य जनित दोषों से रहित हो जाता है। अर्थात पञ्च महापातक जनित दोषों से रहित हो जाता है। इस लिए आश्रमो अविमुक्त (काशी) में निवास करता हुआ शतरुद्रिय का सर्वदा अथवा एक बार जप करें। इस कैवल्योपनिषद् के निरन्तर अभ्यास से व्यक्ति संसार सागर के विनाशक आत्म साक्षात्कार रूप ज्ञान को प्राप्त करता है। जिस प्राप्ति से कैवल्य पद का भागी बनता है कैवल्य पद का भागी है। यह द्विरुक्ति कैवल्य पद प्राप्ति के अवश्यम्भाव के बोधन के लिए है ॥ २४ ॥

इति महादेवोपाध्यायानूदितः कैवल्योपनिषदः
द्वितीयः खण्डः समाप्तिमगात्।

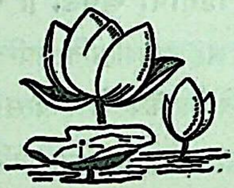

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

॥ श्री काशी विश्वनाथो विजयतेतराम् ॥

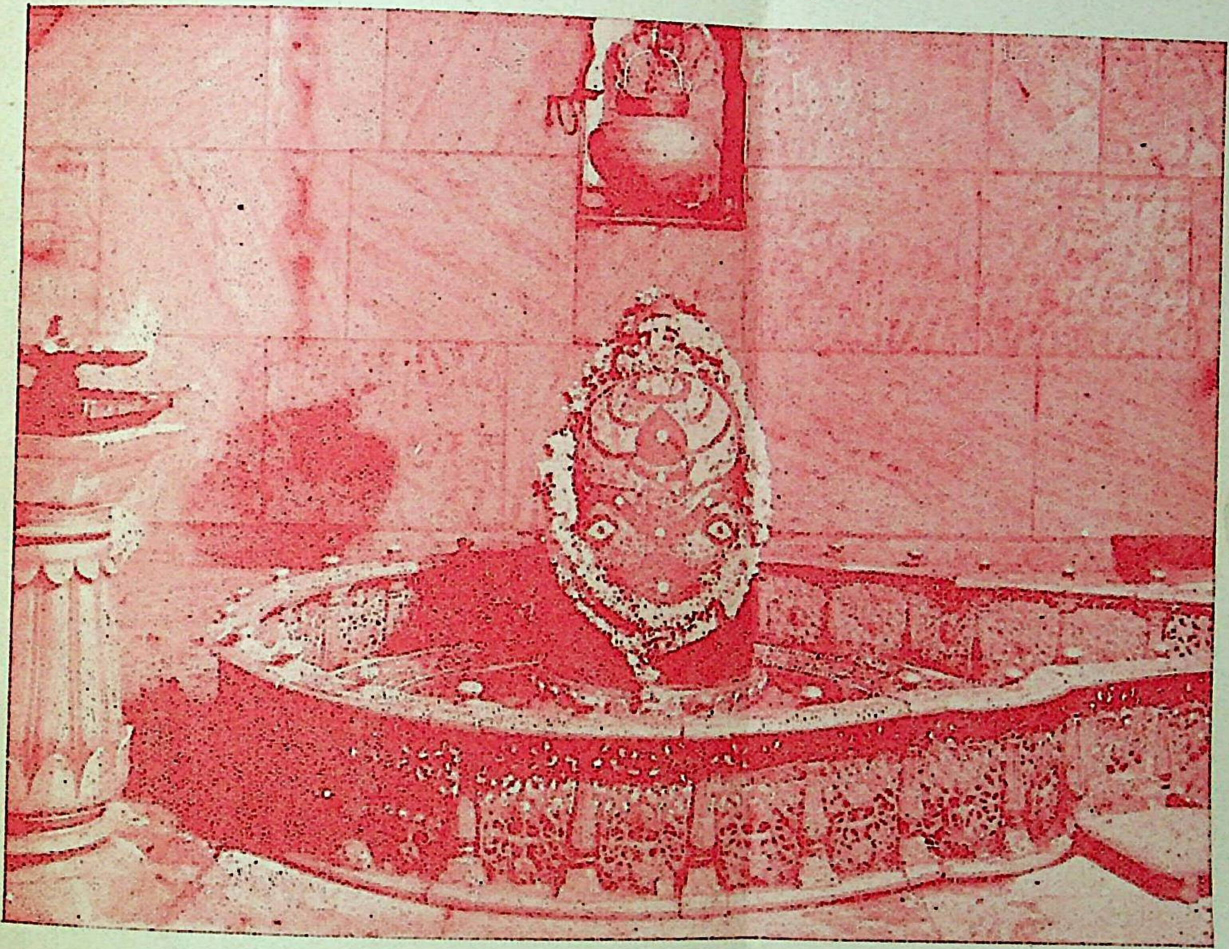

अविद्याविलासेनयस्याखिलायम् प्रपञ्चो यथा भातिरज्जौ भुजङ्गः ।

स्वयं सच्चिदानन्दमाद्यं तुरीयं भजे शङ्करं निर्विकारं निरीहम् ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रास्ताविकं किञ्चित्

मुक्तिकोपनिषद् सभी उपनिषदों की अन्तिम उपनिषद् है। इसमें हनुमान् जी ने श्रीरामचन्द्र जी से मुक्ति का स्वरूप तथा साधन पूछा है। श्रीरामचन्द्र जी ने वेद तथा उनकी शाखाओं का विवरण करते हुये, शाखाओं से निकली हुई उपनिषदों का महत्त्व बतलाया है एवं सालोक्य, सारूप्य, सामीप्य तथा सायुज्य रूप मुक्ति के भेदों को बतलाया है। काशी में प्राण त्याग करते समय दक्षिण कान में भगवान शङ्कर तारक मन्त्र का उपदेश करते हैं। उसी समय स्वप्नवत् क्षणमात्र में प्राणी अनेक जन्म सञ्चित कर्मों का फल भोग कर ज्ञान प्राप्ति द्वारा कैवल्य मुक्ति का भागी बनता है। "यथा स्वप्न मुहूर्तेस्यात् सम्वत्सरशतभ्रमः" (योगवाशिष्ठ)। अतः "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" "काश्यां मरणान्मुक्तिः" "इन श्रुति वाक्यों का समन्वय होता है। सायुज्य मुक्ति का साधन केवल माण्डूक्योपनिषद् अथवा दशोपनिषद् यद्वा बत्तीस उपनिषद्, किंवा अष्टोत्तर शत उपनिषद् का अभ्यास बतलाया गया है। सभी उपनिषदों के नाम तथा उनके शांति पाठ का भी निर्देश किया गया है।

साधन चतुष्टय सम्पन्न श्रद्धावान् मुमुक्षु, श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु के समीप जाकर विधिवत् उपनिषदों का अध्ययन कर वेदान्त श्रवण-मनन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निदिध्यासन द्वारा सञ्चितकर्मक्षयपूर्वक प्रारब्ध का क्षय करता हुआ उपाधि विनिर्मुक्त आकाश के समान परिपूर्ण ब्रह्मरूप हो जाता है। इसी को विदेह कैवल्य मुक्ति कहते हैं। ब्रह्मज्ञान से अतिरिक्त कर्म योग तथा उपासना द्वारा विदेह मुक्ति साध्य नहीं।

द्वितीय अध्याय के प्रारम्भ में हनुमान जी ने जीवन मुक्ति आदि के विषय में प्रश्न किया। श्रीरामचन्द्र जी ने कर्तृत्व, भोक्तृत्व सुख दुःखादि रूप क्लेशों के निरोध से जीवन मुक्ति बतलाई। प्रारब्ध क्षय के अनन्तर विदेह मुक्ति बतलाई। उपनिषदों को प्रमाण तथा नित्य आनन्द रूप प्राप्ति प्रजोयन बतलाया। वासना युक्त मन बन्धन की कारण होता है अतः वासना त्याग का महत्व बतलाया है। इस संसार-वृक्ष का मूल मन है। मन के निग्रह करने पर संसार रूप वृक्ष सूख जाता है। मनोनिग्रह के लिये अध्यात्म विद्या का अभ्यास तथा साधु समागम का उपाय बतलाया गया है। साधन के बिना हठात् मन पर विजय प्राप्त करना असम्भव है। वासना का बन्धन ही बन्धन है, वासना का क्षय ही मोक्ष है।

वासना के क्षय होने पर ही निर्मल चित्त में परज्योति का प्रतिबिम्ब पड़ सकता है। जैसे आतशी शीशे में प्रतिबिम्बित सूर्य वस्तु का दाहक होता है इसी प्रकार निर्मलान्तःकरण में प्रतिबिम्बित ही परज्योति सञ्चित कर्मों का नाशक होता है। पुनर्जन्म के कारण सञ्चित कर्मों के दग्ध हो जाने पर प्रारब्ध क्षय पर्यन्त जीवन् मुक्त रहकर प्रारब्ध क्षय के अनन्तर परिशेषात् विदेह कैवल्य ही शेष रह जाता है; इन गूढ़ रहस्यों के सुखावबोधार्थ मुमुक्षु हितार्थ काशिक संन्यासि संस्कृत महाविद्यालय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के मन्त्री पूज्यपाद् श्रीस्वामी धर्मानन्द जी महाराज की आज्ञा से तथा वाराणसेय हरिश्चन्द्र इण्टर मीडिएट कालेज के संस्कृत प्राध्यापक श्रीत्रिवेणी प्रसाद पाण्डेय साहित्याचार्य, बी० ए० एल० टी० के सहयोग से मैंने इसका हिन्दी अनुवाद किया।

महात्मनां विदुषामाश्रवः
महादेवोपाध्यायः
प्राध्यापकः,
वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालये, वाराणसी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मुक्तिकोपनिषत्

ईशाद्यष्टोत्तरशतवेदान्तपटलाशयम् ।
मुक्तिकोपनिषद्वेद्यं रामचन्द्रपदं भजे ॥ १ ॥
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादायपूर्णमेवावशिष्यते ॥
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ हरिः ॐ ॥ अयोध्यानगरे रम्ये रत्नमण्डपमध्यमे ।
सीताभरतसौमित्रिशत्रुघ्नाद्यैः समन्वितम् ॥ १ ॥

ईशावास्यादि १०८ उपनिषदों से प्रतिपाद्य मुक्तिकोपनिषद् द्वारा वेद्य श्रीरामचन्द्र जी के चरणों में मैं प्रणाम करता हूँ ।

"ॐ" पूर्ववत् मङ्गलवाचक शब्द है ।

अति सुन्दर अयोध्या नगर में रत्न निर्मित मण्डप के बीच सीता, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न आदि के साथ बैठे हुए ॥ १ ॥

सनकाद्यैर्मुनिगणैर्वसिष्ठाद्यैः शुकादिभिः । अन्यैर्भागवतैश्चापि स्तूयमानमहर्निशम् ॥ २ ॥

तथा सनकादि मुनिगुणों से वशिष्ठ, शुक तथा अन्य भगवदुपासकों से अहर्निश स्तुति किये जाते हुए ॥ २ ॥

धीविक्रियासहस्राणां साक्षिणं निर्विकारिणम् । स्वरूपध्याननिरतं समाधिविरमे हरिम् ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भक्त्या शुश्रूषया रामं स्तुवन्पप्रच्छ मारुतिः। राम त्वं परमात्मासि सच्चिदानन्दविग्रहः ॥ ४ ॥

सहस्रों बुद्धि वृत्तियों के प्रकाशक निर्विकार स्वस्वरूप के ध्यान में संलग्न सर्वपापों के अपहारक भगवान् रामचन्द्र की स्तुति करते हुए हनुमान जो ने समाधि के अन्त में पूछा, कि हे श्रीरामचन्द्र जी आप सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा हैं ॥ ३, ४ ॥

इदानीं त्वां रघुश्रेष्ठ प्रणमामि मुहुर्मुहुः। त्वद्रूपं ज्ञातुमिच्छामि तत्त्वतो राम मुक्तये ॥ ५ ॥

हे रघुश्रेष्ठ ! मैं आपको बार-बार प्रणाम करता हूँ, तथा हे राम ! इस समय आपके वास्तविक स्वरूप को जानना चाहता हूँ ॥ ५ ॥

अनायासेन येनाऽहं मुच्येयं भवबन्धनात्। कृपया वद मे राम येन मुक्तो भवाम्यहम् ॥ ६ ॥

जिससे बिना प्रयास मैं संसार बन्धन से छूट जाऊँ तथा हे राम ! कृपाकर वह अपना स्वरूप मुझे बतलाइए जिससे मैं प्रपञ्च से मुक्त हो जाऊँ ॥ ६ ॥

साधु पृष्टं महाबाहो वदामि शृणु तत्त्वतः। वेदान्ते सुप्रतिष्ठोऽहं वेदान्तं समुपाश्रय ॥ ७ ॥

श्रीरामचन्द्र जी ने कहा, हे महाबाहो ? तुमने समुचित प्रश्न किया है। मैं तुमसे वास्तविक विषय का प्रतिपादन करता हूँ तुम

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुनो। मैं उपनिषदों द्वारा ज्ञेय हूँ अतः उपनिषदों का आश्रयण करो ॥ ७ ॥

वेदान्ताः के रघुश्रेष्ठ वर्तन्ते कुत्र ते वद । हनूमञ्छृणु वक्ष्यामि वेदान्तस्थितिमञ्जसा ॥ ८ ॥

हनुमान् जी ने पूछा—कि हे रघुश्रेष्ठ उपनिषद् क्या हैं ? और वे कहाँ स्थित हैं ? श्रीरामचन्द्र जी ने कहा कि हे हनुमान् ! उपनिषदों की स्थिति मैं शीघ्र बतलाता हूँ सुनो ॥ ८ ॥

निश्वासभूता मे विष्णोर्वेदा जाताः सुविस्तराः । तिलेषु तैलवद्वेदे वेदान्तः सुप्रतिष्ठितः ॥ ९ ॥

मुझ व्यापक के श्वासभृत वेद हैं। जिनका बहुत विस्तार है। तिल में तैल के समान वेदों में उपनिषद् स्थित हैं ॥ ९ ॥

राम वेदाः कतिविधास्तेषां शाखाश्च राघव । तासूपनिषदः काः स्युः कृपया वद तत्त्वतः ॥ १० ॥

फिर हनुमान जी पूछा—हे रघुश्रेष्ठ राम ! वेद कितने हैं ? तथा उनकी शाखाएँ कितनी हैं ? उन शाखाओं में उपनिषद् कितने हैं ? कृपापूर्वक उनके स्वरूप को बतलाइए ॥ १० ॥

श्रीराम उवाच । ऋग्वेदादिविभागेन वेदाश्चत्वार ईरिताः । तेषां शाखा ह्यनेकाः स्युस्तासूपनिषदस्तथा ॥११॥

श्री रामचन्द्र जी ने कहा—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्व-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वेद के विभाग से वेद चार हैं। उनकी अनेक शाखायें हैं। उन शाखाओं में अनेक उपनिषद् हैं ॥ ११ ॥

ऋग्वेदस्य तु शाखाः स्युरेकविंशतिसंख्यकाः। नवाधिकशतं शाखा यजुषो मारुतात्मज ॥ १२ ॥

हे वायुपुत्र ! ऋग्वेद की २१ शाखायें हैं, और यजुर्वेद की १०६ शाखायें हैं ॥१२॥

सहस्रसंख्यया जाताः साम्नः शाखाः परन्तप। अथर्वणस्य शाखाः स्युः पञ्चाशद्भेदतो हरे ॥ १३ ॥

हे शत्रुविनाशक हनूमन्! सामवेद की एक सहस्र शाखायें हैं तथा अथर्ववेद की ५० शाखायें हैं ॥ १३ ॥

एकैकस्यास्तु शाखाया एकैकोपनिषन्मता। तासामेकामृचं यश्च पठते भक्तितो मयि ॥ १४ ॥

एक-एक शाखाओं की एक-एक उपनिषद् हैं, मुझमें मनोयोग देकर जो उन उपनिषदों की एक ऋचा भी पढ़ता है ॥ १४ ॥

स मत्सायुज्यपदवीं प्राप्नोति मुनिदुर्लभाम्। राम केचिन्मुनिश्रेष्ठा मुक्तिरेकेति चक्रिरे ॥ १५ ॥

केचित्त्वन्नामभजनात्काश्यां तारोपदेशतः। अन्ये तु सांख्ययोगेन भक्तियोगेन चापरे ॥ १६ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अन्ये वेदान्तवाक्यार्थविचारात्परमर्षयः । सालोक्या-
दिविभागेन चतुर्धा मुक्तिरीरिता ॥ १७ ॥

वह मुनियों से भी दुर्लभ हमारे सायुज्य पद को प्राप्त करता है हनुमान् जी ने पूछा कि हे रामचन्द्र जी कुछ मुनिश्रेष्ठ कहते हैं कि केवल विदेह कैवल्य ही एक मुक्ति है। कुछ लोगों का कहना है कि आपके भजन से तथा काशी में तारक मन्त्रोपदेश द्वारा मुक्ति होती है। कुछ महर्षि ज्ञान योग से, कोई भक्तियोग से तथा दूसरे वेदान्त वाक्यार्थ के श्रवण मननादि से सालोक्य, सारूप्य, सामीप्य तथा सायुज्य इन चार प्रकार की मुक्तियों को बतलाते हैं तो आप बतलाये कि वास्तविक मुक्ति क्या है ॥ १५, १६, १७ ॥

सहोवाचः श्रीरामः । कैवल्यमुक्तिरेकैव पारमार्थिक-
रूपिणी । दुराचाररतो वापि मन्नामभजनात्कपे ॥ १८ ॥
सालोक्यमुक्तिमाप्नोति न तु लोकान्तरादिकम् ।
काश्यां तु ब्रह्मनालेऽस्मिन्मृतो मत्तारमाप्नुयात् ॥ १९ ॥

इस प्रश्न पर श्रीरामचन्द्र जी ने कहा एक कैवल्य मुक्ति ही वास्तविक मुक्ति है दुराचारपरायण जन भी हमारे नाम के भजन से सायुज्यमुक्ति (विष्णुलोक) को प्राप्त करता है। वह अन्य लोकों में नहीं जाता। काशी क्षेत्र में ब्रह्मनाल स्थान पर प्राण त्याग करनेवाला हमारे तारकोपदेश का भागी होता है ॥ १८, १९ ॥

पुनरावृत्तिरहितां मुक्तिं प्राप्नोति मानवः । यत्र कुत्रापि
वा काश्यां मरणे स महेश्वरः ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जन्तोर्दक्षिणकर्णे तु मत्तारं समुपादिशेत् । निर्धूताशेषपापौघो मत्सारूप्यं भजत्ययम् ॥ २१ ॥

तारकोपदेश से संस्कृत वह प्राणी कैवल्य मुक्ति प्राप्त करता है। जिससे संसार के गमागम से छूट जाता है तथा काशी के किसी भी स्थान में प्राण त्याग करनेवाले प्राणी के दाहिने कान में शङ्कर जी हमारे तारक मन्त्र का उपदेश करते हैं। फिर वह सम्पूर्ण पापों से रहित होकर मेरे सारूप्य रूप मुक्ति को पाता है। अर्थात् उसकी क्रमिक मुक्ति होती है ॥ २०, २१ ॥

सैव सालोक्यसारूप्यमुक्तिरित्यभिधीयते । सदाचाररतो भत्वा द्विजो नित्यमनन्यधी- ॥ २२ ॥

मयि सर्वात्मके भावो मत्सामीप्यं भजत्ययम् । सैव सालोक्यसारूप्यसामीप्या मुक्तिरिष्यते ॥ २३ ॥

जब कि हमारे लोक में पहुँचकर हमारे समान रूपवाला हो जाता है, तो उसी को सालोक्य और सारूप्य मुक्ति कहते हैं। सदाचार परायण तथा अनन्यचित्त होकर जो द्विजाति मुझ सर्वात्मक का ध्यान करता है वह मेरे पास पहुँच जाता है। उस समय वह सालोक्य, सारूप्य एवं सामीप्य इन तीनों मुक्तियों का भागी बनता है ॥ २२, २३ ॥

गुरूपदिष्टमार्गेण ध्यायन्मद्गुणमव्ययम् । मत्सायुज्यं द्विजः सम्यग्भजेद्भ्रमरकीटवत् ॥ २४ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुरु से निर्दिष्ट मार्ग पर चलकर हमारे अव्यय गुणों का ध्यान करता हुआ द्विजाति भ्रमरकीट के समान मेरे सायुज्य को प्राप्त करता है। (. . .) भ्रमरकीट निरतिशय ध्यान के द्वारा दूसरे कीड़े को अपने आकार में मिला लेता है ॥ २४ ॥

सैव सायुज्यमुक्तिः स्याद्ब्रह्मानन्दकरी शिवा । चतुर्विधा तु या मुक्तिर्मदुपासनया भवेत् ॥ २५ ॥

यही ब्रह्मानन्द प्राप्त करनेवाली मङ्गलमयी सायुज्य मुक्ति है। ये चार प्रकार की कही गई हैं मुक्तियाँ हमारी उपासना से प्राप्त होती हैं ॥ २५ ॥

इयं कैवल्यमुक्तिस्तु केनोपायेन सिध्यति । माण्डूक्यमेकमेवालं मुमुक्षूणां विमुक्तये ॥ २६ ॥

हनुमान् जी ने पूछा 'कि हे महाराज ! इस कैवल्य मुक्ति को प्राप्त करने का साधन क्या है ? श्रीरामचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि मुमुक्षुओं की मुक्ति के लिए केवल माण्डूक्योपनिषद् का अभ्यास पर्याप्त है ॥ २६ ॥

तथाप्यसिद्धं चेज्ज्ञानं दशोपनिषदं पठ । ज्ञानं लब्ध्वा चिरादेव मामकं धाम यास्यसि ॥ २७ ॥

यदि इससे भी ज्ञान न सिद्ध हुआ तो ईशावास्यादि दश उपनिषदों का पाठ करना चाहिये, इससे ज्ञान प्राप्तकर साधक सालोक्य मुक्ति का भागी हो जाता है ॥ २७ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथापि दृढता नो चेद्विज्ञानस्याञ्जनासुत । द्वात्रिंशाख्योपनिषदं समभ्यस्य निवर्तय ॥ २८ ॥

हे अञ्जनीसुत हनूमन् ! यदि इससे भी ज्ञान में दृढ़ता नहीं आती हो तो बत्तीस उपनिषदों का अभ्यास करना चाहिये ॥ २८ ॥

विदेहमुक्ताविच्छा चेदष्टोत्तरशतं पठ । तासां क्रमं सशान्तिं च शृणु वक्ष्यामि तत्त्वतः ॥ २९ ॥

यदि विदेहमुक्ति की अभिलाषा हो तो एक सौ आठ उपनिषदों का अभ्यास करना चाहिये । शान्तिपाठ सहित मैं उनका क्रम बतलाता हूँ सावधान होकर सुनो ॥ २९ ॥

ईशकेनकठप्रश्नमुण्डमाण्डूक्यतित्तिरिः । ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा ॥ ३० ॥

ईश १, केन २, कठ ३, प्रश्न ४, मुण्ड ५, माण्डूक्य ६, तैत्तिरीय (शिक्षोपनिषत्) ७, ऐतरेय ८, छान्दोग्य ९, बृहदारण्यक १० ॥ ३० ॥

ब्रह्मकैवल्यजाबालश्वेताश्वो हंस आरुणिः । गर्भो नारायणो हंसो बिन्दुर्नादशिरश्शिखा ॥ ३१ ॥

ब्रह्म ११ कैवल्य १२ जाबाल १३ श्वेताश्वतर १४ हंस १५ आरुणिक १६ गर्भ १७ नारायण १८ हंस (परमहंस) १९ बिन्दु २० नाद (अमृतनाद) २१ शिर (अथर्वशिर) २२ शिखा (अथर्वशिखा) २३ ॥ ३१ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैत्रायणी कौषतकी बृहज्जाबालतापनी । कालाग्नि-रुद्रमैत्रेयी सुबालक्षुरिमन्त्रिका ॥ ३२ ॥

मैत्रायणी २४ कौषीतकी (कौषीतकी ब्राह्मण) २५ बृहज्जाबाल २६ तापनी (नृसिंह तापनी) २७ कालाग्निरुद्र २८ मैत्रेयी २९ सुबाल ३० क्षुरिक ३१ मन्त्रिक ३२ ॥ ३२ ॥

सर्वसारं निरालम्बं रहस्यं वज्रसूचिकम् । तेजोनादध्या-नविद्यायोगतत्त्वात्मबोधकम् ॥ ३३ ॥

सर्वसार ३३ निरालम्ब ३४ रहस्य (शुक रहस्य) ३५ वज्रसूचिक ३६ तेजः (तेजोविन्दु) ३७ नाद (नादविन्दु) ३८ ध्यान (ध्यानविन्दु) ३९ विद्या (ब्रह्मविद्या) ४० योगतत्त्व ४१ आत्मप्रबोध ४२ ॥ ३३ ॥

परिव्राट् त्रिशिखी सीता चूडा निर्वाणमण्डलम् । दक्षिणा शरभं स्कन्दं महानारायणाह्वयम् ॥ ३४ ॥

परिव्राट् (नारद परिव्राजक) ४३ त्रिशिखी (त्रिशिखिब्राह्मण) ४४ सीता ४५ चूडा (योगचूडा मणि) ४६ निर्वाण ४७ मण्डल (मण्डल ब्राह्मण) ४८ दक्षिणा (दक्षिणा मूर्ति) ४९ शरभ ५० स्कन्द ५१ महानारायण (त्रिपाद्विभूति महानारायण) ५२ अद्वय (अद्वय तारक) ५३ ॥ ३४ ॥

रहस्यं रामतपनं वासुदेवं च मुद्गलम् । शाण्डिल्यं पैङ्गलं भिक्षुमहच्छारीरकं शिखा ॥ ३५ ॥

रहस्य (राम रहस्य) ५४ राम तपन (राम पूर्वतापिनी), (रामोत्तर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तापिनी) ५५ वासुदेव ५६ मुद्गल ५७ शाण्डिल्य ५८ पैङ्गल ५९ भिक्षु (भिक्षुक) ६० महत् ६१ शारीरक ६२ शिखा (योग शिखा) ६३ ॥ ३५ ॥

तुरीयातीतसंन्यासपरिव्राजाक्षमालिका। अव्यक्तैकाक्षरं पूर्णा सूर्याक्ष्यध्यात्मकुण्डिका ॥ ३६ ॥

तुरीयातीत ६४ सन्यास ६५ परिव्राज (परमहंस परिव्राजक) ६६ अक्ष मालिका ६७, अव्यक्त ६८, एकाक्षर ६९, पूर्णा (अन्न पूर्णा) ७०, सूर्य ७१, अक्षि ७२, अध्यात्म ७३, कुण्डिका ७४, ॥ ३६ ॥

सावित्र्यात्मा पाशुपतं परंब्रह्मावधूतकम्। त्रिपुरातपनं देवी त्रिपुरा कठभावना। हृदयं कुण्डली भस्म रुद्राक्षगण-दर्शनम् ॥ ३७ ॥

सावित्री ७५, आत्मा ७६, पाशुपति ७७, परब्रह्म ७८, अवधूत ७९, त्रिपुरा तपन (त्रिपुरा तापिनी) ८०, देवी ८१, त्रिपुरा ८२, कठ (कठ रुद्र) ८३, भावना ८४, हृदय (रुद्र हृदय) ८५, कुण्डली (योग कुण्डली) ८६, भस्म (भस्म जाबाल) ८७, रुद्राक्ष (रुद्राक्ष जाबाल) ८८, गण (गणपति) ८९, दर्शन (जाबाल दर्शन) ९०, ॥ ३७ ॥

तारसारमहावाक्यपञ्चब्रह्माग्निहोत्रकम्। गोपालतपनं कृष्णं याज्ञवल्क्यं वराहकम् ॥ ३८ ॥

तारसार ९१, महावाक्य ९२, पञ्चब्रह्म ९३, अग्निहोत्र (प्राणाग्नि होत्र) ९४ गोपाल तपन (गोपालपूर्वतापिनी, गोपालोत्तर तापिनी) ९५, कृष्ण ९६, याज्ञवल्क्य ९७, वराहक ॥ ३८ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शाट्यायनी हयग्रीवं दत्तत्रेयं च गारुडम्। कलिजा-
बालिसौभाग्यरहस्यऋचमुक्तिका ॥ ३९ ॥

९८ शाट्यायनी ९९, हयग्रीव १००, दत्तात्रेय १०१, गारुड़ १०२, कलि (कलि सन्तरण) १०३, जाबालि १०४, सौभाग्य (सौभाग्य लक्ष्मी) १०५, रहस्य (सरस्वती रहस्य) १०६, ऋच (बह्वृच) १०७, मुक्तिकोपनिषद् १०८—ये १०८ उप-निषद् हैं ॥ ३९ ॥

एवमष्टोत्तरशतं भावनात्रयनाशनम्। ज्ञानवैराग्यदं पुंसा
वासनात्रयनाशनम् ॥ ४० ॥

पूर्वोक्त ये १०८ उपनिषद् अधिभूत, अधिदैव, अध्यात्म, विषयक कर्मों की नाशिका हैं, अभ्यासिजनों को ज्ञान वैराग्य देने वाली हैं, तथा देहवासना, शास्त्रवासना, लोकवासना इन तीनों वासनाओं को नष्ट करने वाली हैं ॥ ४० ॥

पूर्वोत्तरेषु विहिततत्तच्छान्तिपुरःसरम्। वेदविद्याव्रत-
स्नातदेशिकस्य मुखात्स्वयम् ॥ ४१ ॥

गृहीत्वाष्टोत्तरशतं ये पठन्ति द्विजोत्तमाः। प्रारब्धक्ष-
यपर्यन्तं जीवन्मुक्ता भवन्ति ते ॥ ४२ ॥

जो द्विजश्रेष्ठ वेद विद्याभ्यासी आचार्य के मुख से आदि तथा अन्त में शान्ति पाठ पूर्वक इन १०८ उपनिषदों को ग्रहण कर पाठ करते हैं वे प्रारब्ध कर्म के क्षय पर्यन्त जीवन् मुक्त रहते हैं ।४१, ४२।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ततः कालवशादेव प्रारब्धे तु क्षयं गते। वैदेहीं मामकीं मुक्तिं यान्ति नास्त्यत्र संशयः ॥ ४३ ॥

"तस्य भोगादेव क्षयः" इस नियम के अनुसार समय पाकर जब प्रारब्ध कर्म का क्षय हो जाता है तो वे जीवन्मुक्त शरीर त्याग कर विदेह कैवल्य रूप मुक्ति को पा जाते हैं। इस विषय में सन्देह नहीं ॥ ४३ ॥

सर्वोपनिषदां मध्ये सारमष्टोत्तरं शतम्। सकृच्छ्रवणमात्रेण सर्वाघौघनिकृन्तनम् ॥ ४४ ॥

ये १०८ उपनिषद् सभी उपनिषदों के निष्कर्ष भूत हैं। एक बार भी इनका श्रवण सभी पापपुञ्जों का उन्मूलन कर देता है ॥ ४४ ॥

मयोपदिष्टं शिष्याय तुभ्यं पवननन्दन। इदं शास्त्रं मयादिष्टं गुह्यमष्टोत्तरं शतम् ॥ ४५ ॥

हे पवनसुत ! मैंने शिष्य समझ कर तुम्हें इन १०८ उपनिषद् रूप शास्त्र का उपदेश किया। ये अत्यन्त गोपनीय हैं ॥ ४५ ॥

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि पठतां बन्धमोचकम्। राज्यं देयं धनं देयं याचतः कामपूरणम् ॥ ४६ ॥

बुद्धि पूर्वक तथा अबुद्धि पूर्वक भी उपनिषदों के पाठ करने वालों का संसार रूप बन्धन से मुक्ति हो जाता है। किसी प्रार्थी की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अभिलाषा को पूर्ण करने में समर्थ राज्य को तथा धन को भले ही दे दे (परन्तु इसे न दे) ॥ ४६ ॥

इदमष्टोत्तरशतं न देयं यस्य कस्यचित् । नास्तिकाय कृतघ्नाय दुराचाररताय वै ॥ ४७ ॥

मद्भक्तिविमुखायापि शास्त्रगर्तेषु मुह्यते । गुरुभक्तिविहीनाय दातव्य न कदाचन ॥ ४८ ॥

इन १०८ उपनिषदों को कभी किसी को भी नहीं देना चाहिये। जिन्हें वेद तथा ईश्वर पर विश्वास नहीं, कृतघ्न, दुराचार परायण, मेरी भक्ति से विमुख, केवल शास्त्राभ्यासी तथा गुरुभक्ति से रहित व्यक्ति को कभी न देना चाहिए ॥ ४७, ४८ ॥

सेवापराय शिष्याय हितपुत्राय मारुते । मद्भक्ताय सुशीलाय कुलीनाय सुमेधसे ॥ ४९ ॥

सम्यक् परीक्ष्य दातव्यमेवमष्टोत्तरं शतम् । यः पठेच्छृणुयाद्वापि स मामेति न संशयः ॥५०॥

हे हनुमन् ! गुरु सेवा परायण शिष्य, आज्ञाकारी पुत्र तथा सुशील, सत्कुलोत्पन्न एवं शुद्ध बुद्धिवाले मेरे भक्त को भलीभाँति परीक्षा कर इन अष्टोत्तर शत उपनिषदों को देना चाहिए। जो इसका पाठ करते हैं तथा सुनते हैं वे मुझे प्राप्त होते हैं। इससे सन्देह नहीं ॥ ४९, ५० ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तदेतदृचाभ्युक्तम् । विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि । असूयकायानृजवे शठाय मामा ब्रूया वीर्यवती तथा स्याम् ।

यमेव विद्याश्रुतमप्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपन्नम् । अस्मा इमामुपसन्नाय सम्यक् परीक्ष्य दद्याद्वैष्णवीमात्मनिष्ठाम् ॥ १ ॥ इति ॥

मंत्र भी इस विषय का प्रतिपादन करता है :—

अध्यात्म विद्या ब्राह्मण के पास जाकर कह रही है कि तुम मुझे सुरक्षित रखना मैं तुम्हारी निधि हूँ । दूसरे के गुणों में दोषारोपण करनेवाले, असत्यवादी तथा धूर्त के सामने मेरा उच्चारण न करना । जिससे मैं बलवती रहूँ । उन अधिकारियों को भली-भाँति परीक्षा कर इस वैष्णवी अध्यात्म विद्या को देना चाहिए जो विद्याभ्यासी, एकाग्रचित्त, बुद्धिमान्, ब्रह्मचर्यव्रतपरायण तथा श्रद्धाभक्तिपूर्वक गुरु के समीप आये हों ॥ १ ॥

—❀—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अथ हैनं श्रीरामचन्द्रं मारुतिः पप्रच्छ ऋग्वेदादिविभागेन पृथक् शान्तिमनुब्रूहीति । सहोवाच श्रीरामः । ऐतरेयकौषीतकिनादबिन्द्वात्मप्रबोधनिर्वाणमुद्‌गलाक्षमालिकात्रिपुरासौभाग्यबह्वृचानामृग्वेदगतानां दशसंख्याकानामुपनिषदां वाङ् मे मनसीति शान्तिः ॥ १ ॥

इसके अनन्तर हनूमान् जी ने श्रीरामचन्द्र जी से पूछा, कि ऋग्वेदादि के सारभूत अष्टोत्तरशत उपनिषदों के पृथक् पृथक् शान्तिपाठ को मुझसे कहिये।

इस प्रश्न पर श्रीरामचन्द्र जी ने उत्तर दिया—

ऐतरेय, कौषीतकी, नादबिन्दु, आत्मप्रबोध, निर्वाण, मुद्‌गल, अक्षमालिका, त्रिपुरा, सौभाग्य तथा बह्वृच इन ऋग्वेदान्तर्गत दश उपनिषदों का "वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि वेदस्य म आणीस्थः श्रुतं मे मा प्रहासीरनेनाधीतेनाहोरात्रात्संदधाम्यृतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु मामवतु वक्तारमवतु वक्तारम्" ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

यह शान्ति पाठ है ॥ १ ॥

ईशावास्यबृहदारण्यजाबालहंसपरमहंससुबालमन्त्रिकानिरालम्बत्रिशिखीब्राह्मणमण्डलब्राह्मणाद्वयतारकपैङ्गलभिक्षुतु-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रीयातीताध्यात्मतारसारयाज्ञवल्क्यशाठ्यानीमुक्तिकानां शुक्लयजुर्वेदगतानामेकोनविंशतिसंख्याकानामुपनिषदां पूर्णमदः इति शान्तिः ॥ २ ॥

ईशावास्य, बृहदारण्यक, जाबाल, हंस, परमहंस, सुबाल, मन्त्रिका, निरालम्ब, त्रिशिखी, ब्राह्मण मण्डल ब्राह्मणाद्वयतारक, पैङ्गल, भिक्षु, तुरीयातीत, अध्यात्म, तारसार, याज्ञवल्क्य, शाठ्यायनी, तथा मुक्तिका इन शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत उन्नीस उपनिषदों का "पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते" ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

यह शान्ति पाठ है ॥ २ ॥

कठवल्लीतैत्तिरीयकब्रह्मकैवल्यश्वेताश्वतरगर्भनारायणामृतबिन्द्वमृतनादकालाग्निरुद्रक्षुरिकासर्वसारशुकरहस्यतेजोबिन्दुध्यानबिन्दुब्रह्मविद्यायोगतत्त्वदक्षिणामूर्तिस्कन्दशारीरकयोगशिखैकाक्षराक्ष्यवधूतकठरुद्रहृदययोगकुण्डलिनोपञ्चब्रह्मप्राणाग्निहोत्रवराहकलिसंतरणसरस्वतीरहस्यानां कृष्णयजुर्वेदगतानां द्वात्रिंशत्संख्याकानामुपनिषदां सहनाववत्विति शान्तिः ॥ ३ ॥

कठवल्ली, तैत्तिरीयक, ब्रह्म, कैवल्य, श्वेताश्वतर, गर्भ, नारायण, अमृतबिन्दु, अमृतनाद, कालाग्निरुद्र, क्षुरिका,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सर्वसार, शुकरहस्य, तेजोबिन्दु, ध्यानबिन्दु, ब्रह्मविद्या, योगतत्व, दक्षिणामूर्त्ति, स्कन्द, शारीरक, योगशिखा, एकाक्षर, अक्षि, अवधूत, कठरुद्र, रुद्रहृदय, योगकुण्डलिनी, पञ्च-ब्रह्म, प्राणाग्निहोत्र, वराह, कलिसन्तरण तथा सरस्वती रहस्य, इन कृष्णयजुर्वेदान्तर्गतबत्तीस उपनिषदोंका "ॐ सहनाववतु ॥ सहनौ भुनक्तु ॥ सहवीर्यं करवावहै ॥ तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै" ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

यह शान्ति पाठ है ॥ ३ ॥

केनच्छान्दोग्यारुणिमैत्रायणिमैत्रेयीवज्रसूचिकायोगचूडामणिवासुदेवमहत्संन्यासाऽव्यक्तकुण्डिकासावित्रीरुद्राक्षजाबालदर्शनजाबालीनां सामवेदगतानां षोडशसंख्याकानामुपनिषदामाप्यायन्त्विति शान्तिः ॥ ४ ॥

केन, छान्दोग्य, आरुणि, मैत्रायणि, मैत्रेयी, वज्रसूचिका, योगचूडामणि, वासुदेव, महत्, संन्यास, अव्यक्त, कुण्डिका, सावित्री, रुद्राक्ष, जाबालदर्शन, जाबालि, इन सामवेदान्तर्गत १६ उपनिषदों का "ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि, वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथोबलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि सर्वं ब्रह्मोपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मामा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्त्वनिराकरणं मे अस्तु तदात्मनि निरते य उपनिषत्सुधर्मास्तेमयि सन्तु ते मयि सन्तु" ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

यह शान्ति मन्त्र है ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रश्नमुण्डकमाण्डूक्याथर्वशिरोऽथर्वशिखाबृहज्जाबालनृसिंहतापनीनारदपरिव्राजकसीताशरभमहानारायणरामरहस्यरामतापनीशाण्डिल्यपरमहंसपरिव्राजकान्नपूर्णासूर्यात्मपाशुपतपरब्रह्मत्रिपुरातपनदेवीभावनाभस्मजाबालगणपतिमहावाक्यगोपालतापनोकृष्णहयग्रीवदत्तात्रेयगारुडानामथर्ववेदगतानामेकत्रिंशत्संख्याकानामुपनिषदां भद्रंकर्णेभिरति शान्तिः ॥ ५ ॥

प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, अथर्वशिर अथर्वशिखा, बृहज्जाबाल, नृसिंहतापनी, नारदपरिव्राजक, सीता, शरभ, महानारायण, रामरहस्य रामतापनी, शाण्डिल्य, परमहंस परिव्राजक, अन्नपूर्णा सूर्यात्म, पाशुपत, परब्रह्म, त्रिपुरातपन, देवीभावना, ब्रह्म, जाबाल, गणपति महावाक्य, गोपालतापनी, कृष्ण, हयग्रीव, दत्तात्रेय तथा गारुड़, अथर्व वेदान्तर्गत इन एकतीस उपनिषदों का "ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः"॥ॐशांतिः शांतिः शांतिः ॥

यह शान्ति मन्त्र है ॥ ५ ॥

मुमुक्षवः पुरुषाः साधनचतुष्टयसंपन्नाः श्रद्धावन्तः सुकुलभवं श्रोत्रियं शास्त्रवात्सल्यं गुणवन्तमकुटिलं सर्वभूतहिते रतं दयासमुद्रं सद्गुरुं विधिवदुपसंगम्योपहारपाणयोऽष्टोत्तरशतोपनिषदं विधिवदधीत्य श्रवणमनननिदिध्यास-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नानि नैरन्तर्येण कृत्वा प्रारब्धक्षयाद्देहत्रयभङ्गं प्राप्योपाधिविनिर्मुक्तघटाकाशवत् परिपूर्णता विदेहमुक्तिः। सैव कैवल्यमुक्तिरिति। अत एव ब्रह्मलोकस्था अपि ब्रह्ममुखाद्वेदान्तश्रवणादि कृत्वा तेन सह कैवल्यं लभन्ते। अतः सर्वेषां कैवल्यमुक्तिर्ज्ञानमात्रेणोक्ता। न कर्मसांख्ययोगोपासनादिभिरित्युपनिषत् ॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

नित्यानित्य वस्तु विवेक = नित्य आत्मा तथा अनित्य प्रपञ्च का पृथक्त्वेन ज्ञान, इहामुत्र फल भोग विराग = इस लोक तथा परलोक में फलेच्छा का त्याग, शमदमादि सम्पत = शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान तथा श्रद्धा यह षट् सम्पत्ति एवं मोक्ष की इच्छा, इन्हीं को साधन चतुष्टय कहते हैं। पूर्वोक्त साधन चतुष्टय से सम्पन्न, श्रद्धायुक्त मोक्षाभिलाषी पुरुष को हाथ में उपहार लेकर विधिपूर्वक ऐसे सद्गुरु के पास जाना चाहिये जो सत्कुल में उत्पन्न, [1]श्रोत्रिय, शास्त्रानुरागी, शान्त्यादिगुणसम्पन्न, कुटिलतारहित, सभी प्राणियों का हितकारक तथा दयालु हो। ऐसे सद्गुरु से अष्टोत्तरशत उपनिषदों का अध्ययन करना चाहिये। पुनः निरन्तर श्रवण मनन निदिध्यासन के द्वारा प्रारब्ध कर्म का क्षय करना चाहिए। तदनन्तर स्थूल सूक्ष्म तथा कारण शरीर के सम्बन्ध छूट

१—जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते।
वेद पाठाद्भवेद्विप्रः त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाने पर परिपूर्ण चैतन्य रूप हो जाता है। जैसे घड़े के टूट जाने पर घटाकाश महाकाश में मिल जाता है। इसी को विदेह मुक्ति कहते हैं तथा यही कैवल्य मुक्ति है। उपासना द्वारा ब्रह्मलोक को प्राप्त हुये जीव हिरण्यगर्भ गुरु के मुख से वेदान्त का श्रवण तथा मनन निदिध्यासन कर प्रलय काल में हिरण्यगर्भ के साथ ही कैवल्य के भागी होते हैं। अतः सभी के लिये कैवल्य मुक्ति का साधन एक मात्र ज्ञान है। कर्म तथा सांख्य एवं योग से प्रतिपादित उपासना के द्वारा विदेह मुक्ति नहीं प्राप्त होती यह सिद्धान्त है।

इति मुक्तिकोपनिषदः प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

—❀—

॥ द्वितीयोऽध्यायः ॥

तथा हैनं श्रीरामचन्द्रं मारुतिः पप्रच्छ। केयं जीवन्मुक्तिः केयं किं विदेहमुक्तिः वा तत्र प्रमाणं कथं वा तत्सिद्धिः सिद्ध्या वा किं प्रयोजनमिति। सहोवाच श्री-रामः। पुरुषस्यकर्तृत्वभोक्तृत्वसुखदुःखादिलक्षणश्चित्तधर्मः क्लेशरूपत्वाद्बन्धो भवति। तन्निरोधनं जीवन्मुक्तिः। उपा-धिविनिर्मुक्तघटाकाशवत्प्रारब्धक्षयाद्विदेहमुक्तिः। जीवन्मु-क्तिविदेहमुक्त्योरष्टोत्तरशतोपनिषदः प्रमाणम्। कर्तृत्वादि-दुःखनिवृत्तिद्वारा नित्यानन्दावाप्तिः प्रयोजनं भवति। तत्पु-रुषप्रयत्नसाध्यं भवति। यथा पुत्रकामेष्टिना पुत्रं वाणि-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ज्यादिना वित्तं ज्योतिष्टोमेन स्वर्गं तथा पुरुषप्रयत्नसाध्य-वेदान्तश्रवणादिजनितसमाधिनाजीवन्मुक्त्यादिलाभो भवति। सर्ववासनाक्षयात्तल्लाभः। अत्र श्लोका भवन्ति ॥

हनुमान् जी ने श्रीरामचन्द्र जी से पूछा—कि जीवन्मुक्ति क्या है? तथा विदेह मुक्ति क्या है? उनमें प्रमाण क्या है? तथा कैसे उनकी सिद्धि होती है? सिद्धि से क्या प्रयोजन सिद्ध होता है? श्रीरामचन्द्र जी ने उत्तर दिया कर्तृत्व, भोक्तृत्व, सुख, दुःख आदि अन्तःकरण के धर्म हैं। ये क्लेश रूप हैं तथा ये ही पुरुष के बन्धन हैं। इन्हीं के निरोध को जीवन्मुक्ति कहते हैं। जिस प्रकार घट रूप उपाधि के न रहने पर घटाकाश महाकाश स्वरूप हो जाता है उसी प्रकार देहेन्द्रियादि रूप उपाधि से रहित होकर उपहित चैतन्य निरूपाधि चैतन्य रूप हो जाता है। इसी स्वस्वरूपावाप्ति को विदेह मुक्ति कहते हैं।

जीवन्मुक्ति तथा विदेह मुक्ति में प्रमाण अष्टोत्तरशत उपनिषद् हैं। कर्तृत्व, भोक्तृत्वादि दुःख निवृत्ति द्वारा नित्य आनन्द की प्राप्ति ही प्रयोजन है। जो कि पुरुष के प्रयत्न से साध्य हैं।

जिस प्रकार पुत्रेष्टियाग से पुत्र, वाणिज्यादि व्यवसाय से धन, ज्योतिष्टोम याग से स्वर्ग की प्राप्ति होती है इसी प्रकार पुरुष के प्रयत्न से साध्य वेदान्त श्रवण मनन जनित समाधि से जीवन्मुक्ति का लाभ होता है। उसकी प्राप्ति में सभी वासनाओं का क्षय कारण है। इसी अर्थ के द्योतक निम्नलिखित श्लोक हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उच्छास्त्रं शास्त्रितं चेति पौरुषं द्विविधं मतम् ।
तत्रोच्छास्त्रमनर्थाय परमार्थाय शास्त्रितम् ॥ १ ॥

पौरुष दो प्रकार के होते हैं। पहला उच्छृङ्खल दूसरा शास्त्र नियन्त्रित। उच्छृङ्खल पौरुष अनर्थका तथा शास्त्र नियन्त्रित पौरुष परमार्थ का कारण होता है ॥ १ ॥

लोकवासनया जन्तोः शास्त्रवासनयापि च ।
देहवासनया ज्ञानं यथावन्नैव जायते ॥ २ ॥

पुरुष को तब तक यथार्थ ज्ञान नहीं होता जब तक कि उसके अन्तःकरण में लोकवासना, शास्त्रवासना, देहवासना ये तीनों वासनायें स्थान बनाये रहती हैं ॥ २ ॥

द्विविधो वासनाव्यूहः शुभश्चैवाशुभश्च तौ ।
वासनौघेन शुद्धेन तत्र चेदनुमीयसे ॥ ३ ॥
तत्क्रमेणाशु तेनैव मामकं पदमाप्नुहि ।
अथ चेदशुभो भावस्त्वां योजयति संकटे ॥ ४ ॥
प्राक्तनस्तदसौ यत्नाज्जेतव्यो भवता कपे ।
शुभाशुभाभ्यां मार्गाभ्यां वहन्ती वासनासरित् ॥ ५ ॥

शुभ तथा अशुभ भेद से वासनायें दो प्रकार की होती हैं। उनमें से यदि शुद्ध वासना के द्वारा मेरी ओर उन्मुख होते हो तो क्रमशः शीघ्र ही मेरे पद को प्राप्त हो जाओगे। यदि अशुभ, पूर्व वासना तुम्हें विपत्ति की ओर ले जाती है तो हे हनूमन्। प्रयत्न

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूर्वक इस पर विजय प्राप्त करना चाहिए। इस प्रकार यह वासना रूपी नदी शुभ और अशुभ इन दो धाराओं में बहती है। ३, ४, ५॥

पौरुषेण प्रयत्नेन योजनीया शुभे पथि।
अशुभेषु समाविष्टां शुभेष्वेवाऽवतारयेत् ॥ ६ ॥

अशुभ वासना को प्रयत्न पूर्वक शुभ मार्ग में लगाना चाहिये। यदि वह वासना अशुभ मार्ग की ओर प्रवृत्त होती है तो उसे खींच कर शुभ मार्ग में लाना चाहिए ॥ ६ ॥

अशुभाच्चालितं याति शुभं तस्मादपीतरत्।
पौरुषेण प्रयत्नेन लालयेच्चित्तबालकम् ॥ ७ ॥

यह अन्तःकरण अबोध बालक के समान है। कभी अशुभ मार्ग से शुभ मार्ग में, कभी शुभ मार्ग से अशुभ मार्ग में चलने का प्रयत्न करता है। प्रयत्न पूर्वक धीरे-धीरे अशुभ मार्ग से निवृत्त कर उसे शुभ मार्ग में लाना चाहिए ॥ ७ ॥

द्रागभ्यासवशाद्याति यदा ते वासनोदयम्।
तदाभ्यासस्य साफल्यं विद्धि त्वमरिमर्दन ॥ ८ ॥

हे शत्रुविनाशक हनूमन्! अभ्यास के द्वारा जब शुभ वासना की दृढ़ता हो जाय उस समय अभ्यास की सफलता समझनी चाहिये ॥ ८ ॥

संदिग्धायामपि भृशं शुभामेव समाचर।
शुभायां वासनावृद्धौ न दोषाय मरुत्सुत ॥ ९ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दोनों वासनाओं के सम्बन्ध में सन्देह होने पर भी शुभ वासना की ओर ही प्रवृत्त होना चाहिए। शुभ वासना के अभ्युदय होने पर किसी प्रकार के दोष की शङ्का नहीं रह जाती ॥ ९ ॥

वासनाक्षयविज्ञानमनोनाशा महामते ।
समकालं चिराभ्यस्ता भवन्ति फलदा मताः ॥१०॥

हे महामते ? वासना का नाश, श्रवण, मनन, तथा मनोनिग्रह का यदि एक समय में चिर-काल तक अभ्यास किया जाय तो ये शीघ्र ही फल देने वाले होते हैं ॥ १० ॥

अयमेव समं यावन्नाभ्यस्ताश्च पुनः पुनः ।
तावन्न पदसंप्राप्तिर्भवत्यपि समाशतैः ॥ ११ ॥

जब तक पुनः पुनः इन तीनों का अभ्यास न किया जाय तब तक सैकड़ों वर्ष में भी मोक्ष प्राप्ति नहीं हो सकती ॥ ११ ॥

एकैकशो निषेव्यन्ते यद्येते चिरमप्यलम् ।
तन्न सिद्धिं प्रयच्छन्ति मन्त्राः संकीर्तिता इव ॥ १२ ॥

यदि चिरकाल तक पर्याप्त मात्रा में भी इनमें से किसी एक का अभ्यास किया जाय तो उससे सिद्धि नहीं मिल सकती जैसे विना अर्थ जाने केवल उच्चारण किये हुये मंत्रों से सिद्धि नहीं मिलती ॥ १२ ॥

त्रिभिरेतैश्चिराभ्यस्तैर्हृदयग्रन्थयो दृढाः ।
निःशङ्कमेव त्रुट्यन्ति विसच्छेदाद्गुणा इव ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चिर काल तक इन तीनों के अभ्यास करने पर हृदय की दृढ़ ग्रन्थियाँ निस्सन्देह इस प्रकार टूट जाती हैं जैसे मृणाल (कमल की जड़) टूटने पर उसके भीतर के सूत्र टूट जाते हैं ॥ १३ ॥

जन्मान्तरशताभ्यस्ता मिथ्या संसारवासना ।
सा चिराभ्यासयोगेन विना न क्षीयते क्वचित् ॥१४॥

अनेक जन्मान्तर से अभ्यस्य मिथ्या संसार की वासना चिर-काल अभ्यास के विना कभी भी क्षीण नहीं हो सकती ॥ १४ ॥

तस्मात्सौम्य प्रयत्नेन पौरुषेण विवेकिना ।
भोगेच्छां दूरतस्त्यक्त्वा त्रयमेव समाश्रय ॥ १५ ॥

इस लिये हे सौम्य ! विवेकी पुरुष को चाहिए कि प्रयत्न पूर्वक भोग की इच्छा को सर्वथा त्याग कर इन तीनों का सहारा ले ॥१५॥

तस्माद्वासनया युक्तं मनो बद्धं विदुर्बुधाः ।
सम्यग्वासनया त्यक्तं मुक्तमित्यभिधीयते ॥ १६ ॥

वासना से युक्त मन को विचारवान् पुरुष बद्ध कहते हैं। वासना से रहित मन को मुक्त कहते हैं। इस लिए हे कपीश ! शीघ्र ही मन को वासना रहित बनाने की चेष्टा करनी चाहिए ॥ १६ ॥

मनोनिर्वासनीभावमाचराशु महाकपे ।
सम्यगालोचनात्सत्याद्वासना प्रविलीयते ॥१७॥

भली भाँति सदसत् के विवेक से ही वासना का क्षय होता हैं। वासना के क्षय होने पर मन इस प्रकार शान्त हो जाता है, जैसे वायु रहित स्थान में दीपक ॥ १७ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वासनाविलये चेतः शममायाति दीपवत् ।
वासनां संपरित्यज्य मयि चिन्मात्रविग्रहे ॥ १८ ॥

वासना को छोड़ कर ज्ञान स्वरूप मुझमें जो एकात्मकता का अनुभव करता है वह प्रपञ्च रहित होकर सत् चित् तथा सुखात्मक मेरे स्वरूप को प्राप्त हो जाता है ॥ १८ ॥

यस्तिष्ठति गतव्यग्रः सोऽहं सच्चित्सुखात्मकः ।
समाधिमथ कर्माणि मा करोतु करोतु वा ॥ १९ ॥

ऐकात्म्य जानने वाला व्यक्ति समाधिस्थ हो अथवा न हो, व्यवहार करे या न करे, सभी वासनाओं से जिसका अन्तः करण मुक्त हो जाता है वही मुक्त तथा उत्कृष्ट हृदय वाला है ॥ १९ ॥

हृदयेनात्तसर्वेहो मुक्त एवोत्तमाशयः ।
नैष्कर्म्येण न तस्यार्थस्तस्यार्थोऽस्ति न कर्मभिः ॥२०॥

वासना शून्य व्यक्ति को कर्म करने तथा न करने से कोई प्रयोजन नहीं। समाधि आदि और जप भी उसके लिये फलप्रद नहीं होते ॥ २० ॥

न समाधानजाप्याभ्यां यस्य निर्वासनं मनः ।
संत्यक्तवासनान्मौनादृते नास्त्युत्तमं पदम् ॥ २१ ॥

वासना रहित मौन के बिना कोई उत्तम पद नहीं है ॥ २१ ॥

वासनाहीनमप्येतच्चक्षुरादीन्द्रियं स्वतः ।
प्रवर्तते बहिः स्वार्थे वासनामात्रकारणम् ॥ २२ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जो व्यक्ति वासना रहित हो जाता है उनकी चक्षुरादि इन्द्रियाँ स्वभावतः विषय की ओर जाती हैं न कि किसी प्रयोजन से, क्यों कि फलेच्छा में एक मात्र वासना ही कारण है ॥ २२ ॥

अयत्नोपनतेष्वक्षि दृग्द्रव्येषु यथा पुनः ।
नीरागमेव पतति तद्वत्कार्येषु धीरधीः ॥ २३ ॥

उस व्यक्ति की चक्षुरादि इन्द्रियाँ विना प्रयास प्राप्त विषयों को राग रहित होकर ग्रहण करती हैं । इसी प्रकार प्रत्येक कार्यों में उस व्यक्ति का मन भी आसक्ति रहित रहता है ॥ २३ ॥

भावसंवित्प्रकटितामनुरूपां च मारुते ।
चित्तस्योत्पत्त्युपरमां वासनां मुनयो विदुः ॥ २४ ॥

हे मारुते ! विषयों के अनुभव से जिसकी उत्पत्ति होती है, अनुभव के विषय समान ही जिसका विषय होता है, तथा विषय के न रहने से जहाँ चित्तवृत्ति का उद्गम नहीं होता ऐसे संस्कार को वासना कहते हैं ॥ २४ ॥

दृढाभ्यस्तपदार्थैक्यभावनादतिचञ्चलम् ।
चित्तं संजायते जन्मजरामरणकारणम् ॥ २५ ॥

चैतन्य में अध्यस्त देहेन्द्रियादि की एकत्व भावना से चित्त चञ्चल हो जाता है फिर वही जन्म जरा, तथा मरण का कारण बन जात है ॥ २५ ॥

वासनावशतः प्राण स्पन्दस्तेन च वासना ।
क्रियते चित्तबीजस्य तेन बीजाङ्कुरक्रमः ॥ २६ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्राणों की क्रिया का कारण वासना है तथा वासना का कारण प्राणों की क्रिया है। इसलिये वासना तथा प्राण क्रिया की गति वीज अङ्कुर के समान है। जैसे वीज तथा अङ्कुर में प्राथमिकता का निश्चय नहीं होता इसी प्रकार वासना तथा प्राण क्रिया में प्राथम्य का निश्चय नहीं हो सकता ॥ २६ ॥

द्वे वीजे चित्तवृक्षस्य प्राणस्पन्दनवासने ।
एकस्मिंश्च तयोः क्षीणे क्षिप्रं द्वे अपि नश्यतः ॥२७॥

प्राणक्रिया तथा वासना ये दोनों संकल्पविकल्पात्मक मन के कारण हैं इन दोनों कारणों में एक के भी नाश से दोनों का नाश हो जाता है ॥ २७ ॥

असङ्गव्यवहारत्वाद्भवभावनवर्जनात् ।
शरीरनाशदर्शित्वाद्वासना न प्रवर्तते ॥ २८ ॥

जब व्यवहार में आसक्ति नहीं रह जाती, संसार की वासनायें दूर हो जाती हैं तथा शरीर में नश्वरता का ज्ञान हो जाता है, तब वासना का उत्थान नहीं होता। वासना के न रहने पर चित्त भी अपनी क्रिया नहीं करता ॥ २८ ॥

वासनासंपरित्यागाच्चित्तं गच्छत्यचित्तताम् ।
अवासनत्वात्सततं यदा न मनुते मनः ॥२९॥

वासना रहित होने के कारण जब मन किसी भी समय स्वतंत्रतया विषय को नहीं ग्रहण करता उस समय मनोनिग्रह का उदय होता है तथा परम शान्ति प्राप्त होती है ॥ २९ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अमनस्ता तदोदेति परमोपशमप्रदा।
अव्युत्पन्नमना यावद्भवानज्ञाततत्पदः ॥ ३० ॥

जब तक मन आत्मैक्य का ग्रहण नहीं करता तथा व्यक्ति उस परम पद का अनुभव नहीं करता तब तक गुरुवाक्य तथा शास्त्र प्रमाणोक्ति द्वारा उस आत्म तत्त्व का निर्णय कर व्यवहार करना चाहिए ॥ ३० ॥

गुरुशास्त्रप्रमाणैस्तु निर्णीतं तावदाचार।
ततः पक्वकषायेण नूनं विज्ञातवस्तुना ॥ ३१ ॥

इसके अनन्तर जब मन के विक्षेप दूर हो जाते हैं तथा साधक वस्तु की यथार्थता को जान लेता है तब उसे शुभ वासनाओं को भी छोड़ देना चाहिए इस क्रम से साधक मन की चञ्चलता से पृथक् हो जाता है ॥ ३१ ॥

शुभोऽप्यसौ त्वया त्याज्यो वासनौघो निराधिना।
द्विविधश्चित्तनाशोऽस्ति सरूपोऽरूप एव च।
जीवन्मुक्तः सरूपः स्यादरूपो देहमुक्तिगः ॥३२॥

चित्त का नाश दो प्रकार का होता है। चित्त की सत्ता में जीवनमुक्त का सरूप चित्त नाश होता है तथा विदेह मुक्त का, चित्त के अभाव में अरूप चित्त नाश होता है ॥ ३२ ॥

अस्य नाशमिदानीं त्वं पावने शृणु सादरम् ॥३३॥

हे वायुसुत ! चित्त नाश की व्यवस्था सुनो ॥ ३३ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चित्तनाशाभिधानं हि यदा ते विद्यते पुनः ।
मैत्र्यादिभिर्गुणैर्युक्तं शान्तिमेति न संशयः ।
भूयोजन्मविनिर्मुक्तं जीवन्मुक्तस्य तन्मनः ॥ ३४ ॥

जीवनास्था में जब सरूप चित्त का नाश हो जाता है तब मैत्री करुणा, मुदिता, उपेक्षा गुणों से युक्त होकर प्राणी निस्सन्देह शान्ति पा जाता है । उस जीवन्मुक्त का मन फिर जन्म, जरा तथा मरण का कारण नहीं बनता ॥ ३४ ॥

सरूपोऽसौ मनोनाशो जीवन्मुक्तस्य विद्यते ।
अरूपस्तु मनोनाशो वैदेहीमुक्तिगो भवेत् ॥३५॥

जीवन्मुक्त का सरूपमनोनाश होता है तथा विदेह मुक्ति में अरूप मनोनाश होता है ॥ ३५ ॥

सहस्राङ्कुरशाखात्मफलपल्लवशालिनः ॥ ३६ ॥
अस्य संसारवृक्षस्य मनोमूलमिदं स्थितम् ।
संकल्प एव तन्मन्ये संकल्पोपशमेन तत् ॥ ३७ ॥
शोषयाशु यथा शोषमेति संसारपादपः ।
उपाय एक एवास्ति मनसः स्वस्य निग्रहे ॥ ३८ ॥

जिसके हजारों अङ्कुर, शाखाएँ, फल तथा पल्लव हैं ऐसे संसार रूप वृक्ष का मूल यह मन है । जो मन संकल्पात्मक है। उस संकल्पात्मक मन के शमन से संसार रूप वृक्ष सूख जाता है इस लिये मन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रूप मूल को ही शीघ्र सुखाना चाहिये इस मन के निग्रह का एक मात्र साधन वासना त्याग है ॥ ३६, ३७, ३८ ॥

मनसोऽभ्युदयो नाशो मनोनाशो महोदयः ।
ज्ञमनो नाशमभ्येति मनोऽज्ञस्य हि शृङ्खला ॥ ३९ ॥

मोक्षार्थी के लिये मन की चञ्चलता ही हानि का कारण है, तथा मन का निरोध ही अभ्युदय का कारण है। विद्वान् का मन निरुद्ध होता है तथा अज्ञ का मन बन्धन का कारण बनता है ॥ ३९ ॥

तावन्निशीव वेताला वल्गन्ति हृदि वासनाः ।
एकतत्त्वदृढाभ्यासाद्यावन्न विजितं मनः ॥ ४० ॥

आत्मतत्त्व के दृढ़ाभ्यास से जब तक मन पर विजय नहीं प्राप्त किया जाता तब तक हृदय में वासनायें इस तरह उछलती है जैसे रात्रि में भूत वेताल ॥ ४० ॥

प्रक्षीणचित्तदर्पस्य निगृहीतेन्द्रियद्विषः ।
पद्मिन्य इव हेमन्ते क्षीयन्ते भोगवासनाः ४१ ॥

जिनके चित्त की उछृङ्खल वृत्तियाँ शान्त हो जाती हैं तथा इन्द्रिय रूप शत्रुओं का अवरोध हो जाता है उनकी भोग वासनायें हेमन्त में कमलिनी के समान क्षीण हो जाती हैं ॥ ४१ ॥

हस्तं हस्तेन संपीड्य दन्तैर्दन्तान्विचूर्ण्य च ।
अङ्गान्यङ्गैः समाक्रम्य जयेदादौ स्वकं मनः ॥ ४२ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक हाथ की चञ्चलता को दूसरे के हाथ से दबाकर, दांतों से दांतों को पीस कर तथा अङ्गों से अङ्गों पर आक्रमण कर प्रथम मन पर विजय प्राप्त करना चाहिये । अर्थात् हठ पूर्वक मनोनिरोध करना चाहिए ॥ ४२ ॥

उपविश्योपविश्यैकं चिन्तकेन मुहुर्मुहुः ।
न शक्यते मनो जेतुं विना युक्तिमनिन्दिताम् ॥ ४३ ॥

शुद्ध उपायों के विना चुपचाप बार-बार बैठने से साधक कभी भी मन पर अधिकार नहीं कर सकता जैसे विना अङ्कुश के दुष्ट हाथी को वश में करना असम्भव है ॥ ४३ ॥

अङ्कुशेन विना मत्तो यथा दुष्टमतङ्गजः ।
अध्यात्मविद्याधिगमः साधुसंगतिरेव च ॥ ४४ ॥
वासनासंपरित्यागः प्राणस्पन्दनिरोधनम् ।
एतास्ता युक्तयः पुष्टाः सन्ति चित्तजये किल ॥ ४५ ॥

अध्यात्म विद्या की प्राप्ति साधु समागम वासना का परित्याग तथा प्राण की क्रियाओं का निरोध, चित्त पर विजय के लिये ये पुष्ट युक्तियाँ हैं ॥ ४४, ४५ ॥

सतीषु युक्तिष्वेतासु हठान्नियमयन्ति ये ।
चेतसो दीपमुत्सृज्य विचिन्वन्ति तमोऽञ्जनैः ॥ ४६ ॥

इन पुष्ट युक्तियों के रहते हुये भी जो हठ पूर्वक चित्त को वश

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में करना चाहते हैं उनकी यह क्रिया अन्धकार को दूर करने के लिए दीपक को छोड़ कर कज्जल सञ्चय करने के समान है ॥४६॥

विमूढाः कर्तुमुद्युक्ता ये हठाच्चेतसो जयम् ।
ते निबध्नन्ति नागेन्द्रमुन्मत्तं विसतन्तुभिः ॥ ४७ ॥

जो अविवेकी हठ पूर्वक चित्त पर विजय प्राप्त करने का उद्योग करते हैं उनका उद्योग कमल की जड़ से मतवाले हाथी को बाँधने के प्रयत्न के समान है ॥ ४७ ॥

द्वे बीजे चित्तवृक्षस्य वृत्तिव्रततिधारिणः ।
एकं प्राणपरिस्पन्दो द्वितीयं दृढभावना ॥ ४८ ॥

वृत्ति रूप लता से घिरे हुये चित्तरूपी वृक्ष के दो बीज हैं। पहला प्राण की क्रिया, दूसरा दृढ़वासना ॥ ४८ ॥

सा हि सर्वगता संवित्प्राणस्पन्देन चाल्यते ।
चित्तैकाग्र्याद्यतो ज्ञानमुक्तं समुपजायते ॥ ४९ ॥

प्राण क्रिया से चित्त की एकाग्रता नहीं रह जाती। जिससे व्यापक चैतन्यकाभी ग्रहण असम्भव हो जाता है। इस लिये व्यापक चैतन्यात्मक वृत्ति के लिये चित्त की एकाग्रता अत्यन्त आवश्यक है ॥ ४९ ॥

तत्साधनमथो ध्यानं यथावदुपदिश्यते ।
विनाऽपिविकृतिं कृत्स्नां संभवव्यत्ययक्रमात् ।
यशोऽरिष्टं च चिन्मात्रं चिदानन्दं विचिन्तय ॥५०॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उस चित्त की एकाग्रता का साधन भली भाँति ध्यान कहा गया है। सभी बिकारो को छोड़ कर सम्भव[1] और व्यत्यय[2] के क्रम से उस ध्यान का सम्पादन करने वाले को यश के समान उज्ज्वल मङ्गलमय ज्ञान स्वरूप तथा आनंद स्वरूप उस चैतन्य की चिन्ता करनी चाहिए ॥ ५० ॥

अपानेऽस्तंगते प्राणो यावन्नाभ्युदितो हृदि।
तावत्सा कुम्भकावस्था योगिभिर्यानुभूयते ॥ ५१ ॥

जब तब अपान की क्रियाओं का अवरोध कर हृदय में प्राण का अभ्युदय नहीं होता तब तक कुम्भक अवस्था रहती है जिसका अनुभव योगियों को ही होता है ॥ ५१ ॥

१—संम्भवक्रमः—अव्यक्त चिन्तक योगियों को प्रथम एक व्यापक अन्धकार दृग्गोचर होता है। दृढ़ाभ्यास से उस अन्धकार के दशांश में छोटे अवकाश दिखाई पड़ते हैं। क्रमशः वे अवकाश अव्यक्त के दशांश तक व्याप्त हो जाते हैं। पुनः उसी अवकाश के दशांश को वायु, वायु के दशांश को ज्योति, ज्योति के दशांश को जल, जल के दशांश को पृथिवी, पृथिवी के दशांश को गिरि, नदी, नगरादि व्याप्त करते हुए दिखाई पड़ते हैं। यही सम्भवक्रम है।

२—व्यत्ययक्रमः—ठीक सम्भव क्रम के विपरीत क्रम को ही व्यत्यय क्रम कहते हैं। इस प्रकार दृढ़ाभ्यास से अज्ञान के स्वरूप को जानकर उसमें तुच्छता का अनुभव कर योगी चैतन्याकार वृत्ति के लिए प्रयास करता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बहिरस्तं गते प्राणे यावन्नापान उद्गतः।
तावत्पूर्णां समावस्थां बहिष्ठं कुम्भकं विदुः ॥५२॥

जब तक बाहर निकला हुआ प्राण निष्क्रिय रहता तथा अपान वायु की ऊर्ध्वगति नहीं होती, उस समय प्राण तथा अपान की पूर्ण समानावस्था को बाह्य कुम्भक कहते हैं ॥ ५२ ॥

ब्रह्माकारमनोवृत्तिप्रवाहोऽहंकृतिं विना।
संप्रज्ञातसमाधिः स्याद्ध्यानाभ्यासप्रकर्षतः ॥ ५३ ॥

ध्यान के अभ्यास की अधिकता से अहंकार के बिना लगातार जब चित्त की वृत्ति ब्रह्माकार हो जाती है। तो उस अवस्था को (सम्प्रज्ञात समाधि) कहते हैं ॥ ५३ ॥

प्रशान्तवृत्तिकं चित्तं परमानन्ददायकम्।
असंप्रज्ञातनामायं समाधिर्योगिनां प्रियः ॥ ५४ ॥

आत्म साक्षात्कार के अनंतर जब चित्त की वृत्ति भी शान्त हो जाती है तथा केवल आत्म प्रकाश ही रह जाता है उस समाधि को (असम्प्रज्ञात) समाधि कहते है जो समाधि योगियों को अत्यन्त प्रिय है ॥ ५४ ॥

प्रभाशून्यं मनःशून्यं बुद्धिशून्यं चिदात्मकम्।
अतद्व्यावृत्तिरूपोऽसौ समाधिर्मुनिभावितः ॥ ५५ ॥

इस असम्प्रज्ञात समाधि में घटपटादि विषयों का ज्ञान सँकल्पात्मक मन अध्यवसायात्मिका बुद्धि नहीं रहती इसमें केवल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चैतन्य का ही प्रकाश रहता है। यह समाधि अतद्व्यावृत्ति रूप है। अर्थात् चैतन्य से भिन्न घट पटादि विषयों से भिन्न रूप है। जिसका अनुभव मुनि लोग करते हैं ॥ ५५ ॥

ऊर्ध्वपूर्णमधःपूर्णं मध्यपूर्णं शिवात्मकम् ।
साक्षाद्विधिमुखो ह्येष समाधिः पारमार्थिकः ॥ ५६ ॥

किन्तु सम्प्रज्ञात समाधि में उपरिप्रदेश भी चैतन्य से पूर्ण प्रतीत होता है। अधः प्रदेश तथा मध्य प्रदेश का भी पूर्णत्वेन ज्ञान होता है। इसमें वृत्ति चैतन्यात्मक होती है। यह समाधि अतद्व्यावृत्ति रूप न हो कर साक्षात् विधि रूप है। क्योंकि इसमें वृत्ति की स्थिति रहती है। चैतन्यात्मक वृत्ति के कारण यह पारमार्थिक समाधि है॥ ५६ ॥

दृढभावनया त्यक्तपूर्वापरविचारणम् ।
यदादानं पदार्थस्य वासना सा प्रकीर्तिता ॥ ५७ ॥

पूर्वापर विषयों पर विचार न करते हुये निरन्तर भावना के द्वारा जो किसी पदार्थ का ग्रहण किया जाता है। उस ग्रहण से उत्पन्न संस्कार को वासना कहते हैं ॥ ५७ ॥

भावितं तीव्रसंवेगादात्मना यत्तदेव सः ।
भवत्याशु कपिश्रेष्ठ ! विगतेतरवासनः ॥ ५८ ॥

हे कपि श्रेष्ठ ! तीव्र वेग से निरन्तर जिस वस्तु की भावना की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाय भावना करने वाला उसी रूप में हो जाता है। तथा उसकी दूसरी वासनायें दब जाती हैं ॥ ५८ ॥

ताद्रूपो हि पुरुषो वासनाविवशीकृतः ।
संपश्यति यदैवैतत्सद्वस्त्विति विमुह्यति ॥ ५९ ॥

उस प्रबल वासना के वशीभूत पुरुष जब वासना के विषय के रूप में हो जाता है तब उस विषय को भ्रम वश सत् समझने लगता है ॥ ५९ ॥

वासनावेगवैचित्र्यात्स्वरूपं न जहाति तत् ।
भ्रान्तं पश्यति दुर्दृष्टिः सर्वं मदवशादिव ॥ ६० ॥

प्रबल वासना की विचित्रता से पुरुष उस वासना के विषय को नहीं छोड़ता। मत्त के समान उसकी दृष्टि दूषित हो जाती है और सभी वस्तुओं को भ्रम पूर्ण देखता है ॥ ६० ॥

वासना द्विविधा प्रोक्ता शुद्धा च मलिना तथा ।
मलिना जन्महेतुः स्याच्छुद्धा जन्मविनाशिनी ॥६१॥

शुद्ध और मलिन भेद से वासना दो प्रकार की होती है। उनमें मलिन वासना जन्म का कारण होती है तथा शुद्ध वासना जन्म का विनाशक होती है ॥ ६१ ॥

अज्ञानसुघनाकारा घनाहङ्कारशालिनी ।
पुनर्जन्मकारी प्रोक्ता मलिना वासना बुधैः ।
पुनर्जन्माङ्कुरं त्यक्त्वा स्थितिः संभृष्टबीजवत् ॥ ६२ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आचार्यों ने कहा है कि पुनर्जन्म का कारण यह वासना अज्ञान से व्याप्त रहती है तथा प्रबल अहंकार से युक्त रहती है। समाध्यादि के द्वारा जब इस वासना में पुनर्जन्म के उत्पादन की शक्ति नहीं रह जाती तब इसकी स्थिति भुने हुये बीज के समान हो जाती है ॥ ६२ ॥

बहुशास्त्रकथाकन्थारोमन्थेन वृथैव किम् ।
अन्वेष्टव्यं प्रयत्नेन मारुते ज्योतिरान्तरम् ॥ ६३ ॥

जैसे वस्त्र खाकर जुगाली (पागुर) करने वाले पशु को कुछ रस नहीं मिलता इसी प्रकार अनेक शास्त्रों के वृथाभ्यास से भी कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। इस लिये हे वायु सुत! प्रयत्न पूर्वक उस आत्म रूप ज्योति का अन्वेषण करना चाहिए ॥ ६३ ॥

दर्शनादर्शने हित्वा स्वयं केवलरूपतः ।
य आस्ते कपिशार्दूल ब्रह्म स ब्रह्मवित्स्वयम् ॥ ६४ ॥

हे कपि श्रेष्ठ! दर्शन (वृत्ति) अदर्शन (अविद्या) इन दोनों को छोड़ कर जो स्वयं चैतन्य स्वरूप हो जाता है वह ब्रह्मवेत्ता स्वयं ब्रह्म रूप हो जाता है ॥ ६४ ॥

अधीत्य चतुरो वेदान्सर्वशास्त्राण्यनेकशः ।
ब्रह्मतत्त्वं न जानाति दर्वी पाकरसं यथा ॥ ६५ ॥

चारों वेदों का तथा अनेक वार सभी शास्त्रों का अध्ययन करने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पर भी जो ब्रह्म तत्त्व नहीं जानता वह पाक क्रिया में लगी हुई तथा पाकरस को न जानने वाली दर्वी के समान है ॥ ६५ ॥

स्वदेहाशुचिगन्धेन न विरज्येत यः पुमान् ।
विरागकारणं तस्य किमन्यदुपदिश्यते ॥ ६६ ॥

अपने शरीर के अपवित्र गन्ध से भी जिन्हें वैराग्य नहीं होता उनके लिये अन्य वैराग्य साधनों का किस प्रकार उपदेश किया जा सकता है। अर्थात् उनके लिए उपदेश असम्भव हैं ॥ ६६ ॥

अत्यन्तमलिनो देहो देही चात्यन्तनिर्मलः ।
उभयोरन्तरं ज्ञात्वा कस्य शौचं विधीयते ॥ ६७ ॥

यह शरीर अत्यन्त मलिन है जिसकी शुद्धि असम्भव है। आत्मा भी अत्यन्त निर्मल है जिसकी शुद्धि की अपेक्षा नहीं है। इस प्रकार दोनों में अत्यन्त भिन्नता है। अर्थात् एक में शौच असम्भव तथा दूसरे में शौच अनावश्यक है। इस लिए किसकी शुद्धि का प्रयत्न किया जाय ॥ ६७ ॥

बन्धो हि वासनाबन्धो मोक्षः स्याद्वासनाक्षयः ।
वासनां संपरित्यज्य मोक्षार्थित्वमपि त्यज ॥ ६८ ॥

वासना का बन्धन ही बन्धन है तथा वासना का नाश ही मोक्ष है इस लिये प्रथम मोक्षार्थी को वासना का नाश करना चाहिए। इसके अनन्तर मोक्ष की इच्छा का भी त्याग कर देना चाहिए ॥ ६८ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मानसीर्वासनाः पूर्वं त्यक्त्वा विषयवासनाः ।
मैत्र्यादिवासनानाम्नीर्गृहाणामलवासनाः ॥ ६९ ॥

स्रग्वनितादि विषयों की मानसी वासना को छोड़ कर मैत्री करुणा, मुदिता, उपेक्षा इन निर्मल वासनाओं को स्वीकार करना चाहिए ॥ ६९ ॥

ता अप्यतः परित्यज्य ताभिर्व्यवहरन्नपि ।
अन्तःशान्तः समस्नेहो भव चिन्मात्रवासनः ॥ ७० ॥

उपेक्षा भाव से उन मैत्र्यादि के द्वारा व्यवहार करते हुये भी पुरुष को शान्त चित्त, तथा सर्वत्र सम बुद्धि होना चाहिए तथा केवल एक चैतन्य की ही वासना होनी चाहिए ॥ ७० ॥

तामप्यथ परित्यज्य मनोबुद्धिसमन्विताम् ।
शेषस्थिरसमाधानो मयि त्वं भव मारुते ॥ ७१ ॥

हे वायु सुत ! इसके अनन्तर सङ्कल्पात्मक मन अध्यवसायात्मक बुद्धि से युक्त उस चिन्मात्र वासना को भी छोड़ कर प्रपञ्च रहित चैतन्य रूप मुझमें ही अत्यन्त समाहित होना चाहिए ॥ ७१ ॥

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरसं नित्यमगन्धवच्च यत् ।
अनामगोत्रं ममरूपमीदृशं भजस्वनित्यं पवनात्मजार्तिहन् ॥७२

हे वायु सुत ! शब्द रहित, स्पर्श शून्य, रूप रहित, अनश्वर, तथा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रसविहीन, नित्य, गन्ध रहित, नाम गोत्र से पृथक् मेरे ऐसे रूप का जब सर्वदा चिन्तन करोगे तो सभी प्रपञ्चों से मुक्त हो जावोगे ॥ ७२ ॥

दृशिस्वरूपं गगनोपमं परं सकृद्विभातं त्वजमेकमक्षरम्।
अलेपकं सर्वगतं यदद्वयं तदेव चाहं सकलं विमुक्त ॐ ॥७३॥

जो ज्ञान स्वरूप, आकाश के समान व्यापक, प्रपञ्च से पृथक् है, अंशांशि भाव न होने के कारण जिसका क्रमिक भान न होकर एक काल में भान होता है, जो अज, एक, अक्षर, धर्म सम्बन्ध शून्य, व्यापक, अद्वितीय, प्रपंच का कारण, विमुक्त परम चैतन्य है वही मैं हूँ ॥ ७३ ॥

दृशिस्तु शुद्धोऽहमविक्रियात्मको
न मेऽस्ति कश्चिद्विषयः स्वभावतः।
पुरस्तिरश्चोर्ध्वमधश्च सर्वतः
सुपूर्णभूमाहमितीह भावय ॥ ७४ ॥

मैं ज्ञानस्वरूप, शुद्ध, विकार रहित, हूँ। मुझमें प्रपंच का सम्बन्ध नहीं। सामने, आस-पास, ऊपर नीचे, तथा चारों ओर पूर्ण रूप व्यापक मैं ही हूँ यह भावना करनी चाहिए ॥ ७४ ॥

अजोऽमरश्चैव तथाजरोऽमृतः स्वयंप्रभः सर्वगतोऽहमव्ययः।
न कारणं कार्यमतोत्यनिर्मलः सदैव तृप्तोऽहमितीहभावय ।७५।

मोक्षार्थी को इस प्रकार की भावना करनी चाहिए कि अज,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अमर, अजर, अमृत, स्वयं प्रकाश, सर्व व्यापक, अनश्वर, देहेन्द्रियादि से रहित, निर्मल, सर्वदा तृप्त मैं हूँ ॥ ७५ ॥

जीवन्मुक्तपदं त्यक्त्वा स्वदेहे कालसात्कृते ।
विशत्यदेहमुक्तत्वं पवनोऽस्पन्दतामिव ॥ ७६ ॥

प्रारब्ध कर्म के क्षय हो जाने पर जब शरीर त्याग हो जाता है तब इस प्रकार की भावना करने वाले पुरुष जीवन मुक्त पद को छोड़ कर विदेह कैवल्य पद को प्राप्त करते हैं, जिस प्रकार क्रिया शून्य वायु स्वरूपावस्थित हो जाता है ॥ ७६ ॥

तदेतदृचाभ्युक्तम् । तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ ॐ सत्यमित्युपनिषत् ॥ ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

—※—

इसी विषय का ऋचा में भी प्रतिपादन किया है—व्यापक ब्रह्म का जो सर्वोत्कृष्ट पद है ज्ञानी सर्वदा उसी पद का साक्षात्कार करते हैं। वह ज्योति आकाशव्याप्त विराट् की चक्षु (सूर्य) के समान है। सभी प्रकार की दीनता से रहित तथा सावधान हो कर उस ज्योति का साक्षात्कार करने वाले विप्र देदीप्यमान होते हैं। वह

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ज्योति सत्—अपरोक्ष, (पृथ्वी अप् तेज) त्यत्—परोक्ष (वायु आकाश) का कारण रूप है, अथवा वह अवाध्यरूप है यही वेदों का रहस्य है ।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

इति महादेवोपाध्यायेन विरचितः शुक्लः यजुर्वेदगतायाः
मुक्तिकोपनिषदः हिन्दी भाषानुवादः समाप्तः ॥

॥ ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीगणेशाय नमः

❋ अथविज्ञाननौकाप्रारम्भः ❋

तपोयज्ञदानादिभिः शुद्धबुद्धि र्विरक्तो नृपादौ पदे तुच्छबुद्धया। परित्यज्य सर्वं यदाप्नोति तत्त्वं परंब्रह्म नित्यं तदेवाहमस्मि ॥ १ ॥ दयालुं गुरुं ब्रह्मनिष्ठं प्रशांतं समाराध्य मत्या विचार्य स्वरूपम् । यदाप्नोति तत्त्वं निदिध्यास्य विद्वान्परंब्रह्म० ॥ २ ॥ यदानन्दरूपं प्रकाशस्वरूपं निरस्तप्रपञ्चं परिच्छेदशून्यम्। अहंब्रह्मवृत्त्येकगम्यं तुरीयं परंब्रह्म० ॥ ३ ॥ यदज्ञानतो भाति विश्वं समस्तं विनष्टं च सद्यो यदात्मप्रबोधः। मनोवागतीतं विशुद्धं विमुक्तं परंब्रह्म० ॥ ४ ॥ निषेधे कृते नेति नेतीति वाक्यैः समाधिस्थितानां यदा भाति पूर्णम्। अवस्थात्रयातीतमेकं तुरीयं परंब्रह्म० ॥ ५ ॥ यदानन्दलेशैः समानन्दि विश्वं यदा भाति सत्त्वे तदाभाति सर्वम्। यदालोचने रूपमन्यत्समस्तं परंब्रह्म०॥६॥ अनन्तं विभुं सर्वयोनिं निरीहं शिवं सङ्गहीनं यदोङ्कारगम्यम् निराकारमत्युज्ज्वलं मृत्युहीनं परंब्रह्म० ॥ ७ ॥ यदानन्दसिन्धौ निमग्नः पुमान्स्यादविद्याविलासः समस्तप्रपञ्चः। यदा न स्फुरत्यद्भुतं यन्निमित्तं परंब्रह्म० ॥ ८ ॥ स्वरूपानुसंधानरूपां स्तुतिं यः पठेदादराद्भक्तिभावो मनुष्यः। शृणोतीह वा नित्यमुद्यक्तचित्तो भवेद्विष्णुरत्रैव वेदप्रमाणात् ॥९॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विज्ञाननावं परिगृह्य कश्चित्तरेद्यदज्ञानमयं भवाब्धिम् । ज्ञानासिना यो हि विच्छिद्य तृष्णां विष्णोः पदं याति स एव धन्यः ॥ १० ॥ इति श्रीशङ्कराचार्यविरचिता विज्ञाननौका संपूर्णा ॥ १ ॥

॥ अथ काशीपञ्चकप्रारम्भः ॥

श्रीगणेशाय नमः । मनोनिवृत्तिः परमोपशांतिः सा तीर्थवर्य्या मणिकर्णिका च । ज्ञानप्रवाहो विमलैवगङ्गा सा काशिकाहं निजबोधरूपः ॥ १ ॥ यस्यामिदं कल्पितमिंद्रजालं चराचरं भाति मनोविलासम् । सच्चित्सुखैका परमात्मरूपा सा का० ॥ २ ॥ कोशेषु पञ्चस्वधिराजमाना बुद्धिर्भवानी प्रतिदेहगेहम् । साक्षी शिवः सर्वगतोंतरात्मा सा का० ॥ ३ ॥ कश्यां हि काशते काशी काशी सर्व प्रकाशिका । सा काशी विदिता येन तेन प्राप्ता हि काशिका ॥४॥ काशीक्षेत्रं शरीरं त्रिभुवनजननी व्यापिनी ज्ञानगङ्गा भक्तिः श्रद्धा गयेयं निजगुरुचरणध्यानयोगः प्रयागः । विश्वेशोयं तुरीयः सकलजनमनःसाक्षिभूतोऽन्तरात्मा देहे सर्वं मदीये यदि वसति पुनस्तीर्थमन्यत्किमस्ति ॥ ५ ॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितंकाशीपंचकंसंपूर्णम् ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रह्मज्ञानशिवप्राप्त्यर्थम्

॥ अथात्मपञ्चकप्रारम्भः ॥

श्रीगणेशाय नमः। नाहं देहो नेंद्रियाण्यंतरङ्गं नाहङ्कारः प्राणवर्गो न बुद्धिः। दारापत्यक्षेत्रवित्तादिदूरः साक्षीनित्यः प्रत्यगात्मा शिवोऽहम् ॥ १ ॥ रज्ज्वज्ञानाद्भाति रज्जुर्यथाऽहिः स्वात्माज्ञानादात्मनो जीवभावः। आप्तोक्त्याहि भ्रांतिनाशे स रज्जुर्जीवोनाहं देशिकोक्त्या शिवोहम् ॥ २ ॥ आभातीदं विश्वमात्मन्यसत्यं सत्यज्ञानानन्दरूपे विमोहात्। निद्रा मोहात्स्वप्नवत्तन्न सत्यं शुद्धः पूर्णो नित्य एकः शिवोहम् ॥ ३ ॥ मत्तो नान्यत्किंचिदत्रास्ति विश्वं सत्यं बाह्यं वस्तु मायोपक्लृप्तम्। आदर्शान्तर्भासमानस्य तुल्यं मय्यद्वैते भाति तस्माच्छिवोऽहम् ॥ ४ ॥ नाहं जातो न प्रवृद्धो न नष्टो देहस्योक्ताः प्राकृताःसर्वधर्माः। कर्तृत्वादिश्चिन्मयस्यास्ति नाहंकारस्यैव ह्यात्मनो मे शिवोऽहम् ॥ ५ ॥ नाहं जातो जन्ममृत्यू कुतो मे नाहं प्राणः क्षुत्पिपासे कुतो मे। नाहं चित्तंशोकमोहौ कुतो मे नाहं कर्ता बंधमोक्षौ कुतो मे ॥ ६ ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं आत्मपंचकस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

—•—

सरला प्रेस, वाराणसी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संसार दुःख निवृत्यर्थं तथा जीवनमुक्तिप्राप्त्यर्थं

।। अथ शिवनामावल्यष्टकप्रारंभः ।।

श्रीगणेशाय नमः ।। हे चन्द्रचूड मदनांतक शूलपाणे स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शंभो । भूतेश भीतिभयसूदन मामनाथं संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ।। १ ।। हे पार्वतीहृदयवल्लभ चंद्रमौले भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप । हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ।। २ ।। हे नीलकंठ वृषभध्वज पंचवक्त्र लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व । हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ।। ३ ।। हेविश्वनाथ शिवशङ्कर देवदेव गङ्गाधर प्रमथनायक नन्दिकेश । बाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ।। ४ ।। वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश । सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ।।५।। श्रीमन्महेश्वर कृपामय हे दयालो हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ । भस्माङ्गरागनृकपालकलापमाल संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ।। ६ ।। कैलाशशैलविनिवास वृषाकपे हे मृत्युञ्जय त्रिनयन त्रिजगन्निवास । नारायणप्रिय मदापहशक्तिनाथ संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ।। ७ ।। विश्वेश विश्वभवनाशितविश्वरूप विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाभिवेश । हे विश्वबन्धुकरुणामय दीनबन्धो संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ।। ८ ।। गौरीविलासभुवनाय महेश्वराय पञ्चाननाय शरणागतकल्पकाय । सर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय । इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं शिवनामावल्यष्टकं संपूर्णम् ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi